सूचीपत्र

नं० १०३ से लेकर नं० ११२ के पृष्ठ तक नित्यसेवा आरती के पद है.

* श्रीहरिर्जयति *

श्रीमथुरेश महोत्सव पद संग्रह ॥

॥ जय शिव ओंकारा प्रभु हर शिव ओं० ॥ इस के वज़न पर ॥

आरती

जय जय गोपाला प्रभु गिरिधर गोपाला ॥
संग अनङ्ग लजावन राधे ब्रजबाला ॥ जय देव०॥
१—नेति नेति कह वेद पुकारत नहि पायो पारा ॥
भक्त हेत सोइ धारै नाना अवतारा ॥ जय दे०॥
२—योगीजन मुनि तापस जाको ध्यान धरत हारे ॥
नंद गेह में खेलत सोइ नरतन धारे ॥ जय दे०॥
३—ब्रह्मा और सुरेश को आपहि मद मर्दन कीनो ॥
वत्स गोप नव रचकर गिरिवर करलीनो ॥जय०॥
४—कंसादिक पापिष्ट असुर तुम छिन में हतमारे ॥
ध्रू मीरां से भक्त बहुत तुम निस्तारे ॥ जय दे०॥
५—सुंदर बदन मदन मद मर्दन छवि जन मनभावन ॥
निरखे मिटै मनुज को भव आवन जावन ॥ ज०॥
६—प्रेम विवश तुम कीनी ब्रजमें अदभुत रसलीला ॥
कौन न रीझै प्रभु के सुनकर गुण शीला ॥ ज०॥
७—तुम गोविंद किशोरी के प्रभु प्राणहुतैं प्यारे ॥
वसौ सदा मथुरेश हिये बंसी वारे ॥ जय देव० ॥

बधाई श्रीगोपालजी के जन्मोत्सव की

राग कानडा

(१) गावो आज आनन्द बधाई ॥

जो दुर्लभ सुर मुनि योगिन कौ, सो निधि सुलभ जसोमत पाई ।

गावो आज आनन्द० ॥

हरि प्रगटे श्री नंद महिर घर, सकल चरा चर मन हर खाई ।

गावो आज आनन्द० ॥

झुंड झुंड सखियां सुन शोभा, पुन पुन छबि निरखन को धाई ।

गावो आज अनन्द० ॥

उच्छब तीन लोक में छायो, शोक घरी असुरन को आई ।

गावो आज आनन्द० ॥

श्रुति जेहि नेति नेति कहि खोजत, ताहि जसोमत गोद खिलाई ।

गावो आज आनन्द० ॥

आस लगी इनहीं दर्शन की, मथुरा दास की प्यास बुझाई ।

गावो आज आनन्द० ॥

॥ तथा ग़ज़ल ॥

(२) बधाई हर जगह छाई जसोमत जाया लाला है ।

लुभाया जिसने आलमको जमाल उसकानिरालाहै ॥

नज़र जिसकी पड़ी उसपर हुवा वो सर बसर आशिक़ ।

तअज्जुब है कि पल पल बीच हुस्न उसका दुबाला है ॥

हज़ारों सुन्दरी नारी हुई सुन सुन के मतवारी।
दरस को मिल चली सारी ये प्रेमी पाठशाला है॥
हैं नाना धुन बजैं बाजे समाज आनन्द के साजे।
विराजैं नंद दरवाज़े ख़ज़ाना खोल डाला है॥
कोई लावै नज़र मोहरा कोई गंडा कोई डोरा।
निहोरा कर कहै मधुरा न लाला डरने वाला है॥

(तथा पद)

(३) जसोधा यह निध केहि विध पाई॥
जाकी ख़ास रमासी दासी, सो तव सुत भयो माई।
जसोधा यह निध केहि० ॥
लेत न बन्यो भेद वेदन तब, नेत नेत श्रुति गाई।
अज वाकी पद रज को वन्दै, नन्दै देत बडाई।
जसोधा यह निध केहि० ॥
भादौं कृष्ण अष्टमी शुभ तिथि, निस अँधियारी छाई।
प्रघट भये झट ही नट नागर, द्युति रवि कोट सुहाई।
जसोधा यह निध केहि० ॥
गोकुल विच न रह्यो कुल कोऊ, जहां न बजत बधाई।
अङ्क अङ्क जन मिलैं शङ्क तज, रङ्क मानो धन पाई।
जसोधा यह निध केहि० ॥
नंद भवन आनन्द महोदधि, रह्यो अधिक लहराई।

झुंड झुंड ब्रज बनिता धावैं, गावैं करत नचाई ।
जसोधा यह निध केहि० ॥
सुर दल भेस बदल चल धाये, छवि लख बल बल जाई ।
श्री मथुरेश वदन सोभा पर, कोटिन मदन लजाई ।
जसोधा यह निध केहि० ॥

॥ तथा ॥

(ऐ राजा लीजे खबरिया हमारीरे इसके वजन पर)

(१) लीजे माई जसोधा बधाई री ॥
पैदा हुआ जो आप के घरमें ये लाल है ।
दिल कश अजीब उसका ये हुस्नो जमाल है ।
जादू का है ये पुतला या ख़ूबी का जाल है ।
देखै जो इस्कौ उसका ही दिल पाय माल है ।
ऐसा सुन्दर मनोहर कन्हाई री ॥ लीजै० ॥
घर घर में शादियाने सुहाने हैं बज रहे ।
हर घाट बाट ठाट ख़ुशी के हैं सज रहे ।
इन्द्रादि देव देख के संपत कौ लज रहे ।
हो रुष्ट दुष्ट जीव हैं प्राणों कौ तज रहे ।
सारी दुनिया में महिमाहै छाई री ॥ लीजै० ॥
आनन्द भरे नंद का धन ये समाज़ है ।
कोटिन में हो कठिन से वो दिन इनकौ आज है ।

शंकर भी आया लाल के दर्शन के काज है।
ब्रज राज के ही हाथ मैं मथुरा की लाज है।
इसने लक्ष्मी सी दासी बनाई री ॥ दीजै० ।



(तथा)

(झूलन चलौ हिंडोरे वृषभान नन्दिनी, इसके वजन पर)

(५) देखन चलौरी मोहनी छब मन की भावनी ॥
प्रघट्यो है प्राण प्यारो, वो नंद को दुलारो ।
जीवन को धन हमारो, सूरत लुभावनी ॥ देख०॥
घर घर बजैं बधाई, सबने ख़ुशी मनाई ।
महिमा बड़ी है छाई, तिहु लोक पावनी ॥ देख०॥
भयो नंदजी के लाला, सुर मुनि भये निहाला ।
जग में भया उजाला, चरचा सुहावनी ॥ देख०॥
मथुरा भी इक भिकारी, आसा लगाई भारी ।
दो झांकी प्यारी प्यारी, हिये की रिझावनी ॥ देख०॥



(तथा)

(कुंवर नंदजी के आनन्द कंद, इसके वजन पर)

(६) ललन मुख देखोरी चल धाय ॥
रूप अंनूपम हरि पुरुषोत्तम प्रघटे ब्रज में आय ।

ललन मुख देखोरी चल० ॥

नन्द जसोमत भाग सराहत, ठाड़े सुर समुदाय ।
दर्शन को आनन्द कन्द के, बिनय करत ललचाय ।
ललन मुख देखोरी चल० ॥

नन्द पौर सब ठौर ठौर पै, बाजे रहे बजाय ।
नाचत गावत मोद बढावत, गोपी गोप सरसाय ॥
ललन मुख देखोरी चल० ॥

पावत हैं धन रतन अमूले, याचक जन जो जाय ।
दानी करण गुमानी नृप बल, दान देख लजियाय ।
ललन मुख देखोरी चल० ॥

भादौं में दधि कादौं भारी, दीनों मेल बनाय ।
द्वारे द्वारे हर गारे यारे, गोप फिरैं हुलसाय ।
ललन मुख देखोरी चल० ॥

नाम कृष्ण पर जग उजियारो, प्यारो तव सुतमाय ।
जसुधा दरस सुधा भिक्षा दे, मधुरा बल बल जाय ।
ललन मुख देखोरी चल० ॥

[तथा]

(ये आई वो आई उमंग घटा, इसके वजन पर)

(७) दिखलारी दिखलारी मोहन मैया झांकी, री प्यारी
प्यारी ॥ दिखलारी० ॥

या छबि देख काम नृप लाजे कोटि चन्द्र उजियारी, मैं वारी, वारी ।

दिखलारी दिखलारी मोहन० ॥

इन्द्रादिक सुर हारे ठारे, टेरत दरस दिखारी, भिकारी, पुरारी।

दिखलारी दिखलारी मोहन० ॥

कृष्ण जन्म सुन गोकुल धाईं, सारी गोप कुमारी, दुलारी, २।

दिखलारी दिखलारी मोहन० ॥

देत बधाई मन हर षाई, हैं ब्रज के सुखकारी, बिहारी, बिहारी।

दिखलारी दिखलारी मोहन० ॥

मधुरा प्रेम कृपा बर याचै, तन मन से बलिहारी, तिहारी, २।

दिखलारी दिखलारी मोहन० ॥

[तथा]

(देवरिया पार लगाय, इसके वजन पर)

(८) सांवरिया नन्द कुमार जनम्यो गोकुल मैं ॥

लोग लुगाई देत बधाई, अरे कन्हाई पूर्ण कला औतार।

जनम्यो गोकुल मैं ॥

दे दे तारी गावत गारी, अरे सुखारी नाचत सारी नार।

जनम्यो गोकुल मैं ॥

भादौं मैं दधिकादौं माची, अरे घृताची नाची बीच बज़ार।

जनम्यो गोकुल मैं ॥

जैजै कर दें गोप आवाज़ें, अरे समाजें रोप दईं दिस चार।

जनम्यो गोकुल मैं ॥

नौबत भेरि नंद के द्वारे, अरे नगारे बाजैं घर घर द्वार।
जनम्यो गोकुल में ॥
जसुमतकी मत पूछो मनकी, अरे बदन की दीनी सुरत बिसार।
जनम्यो गोकुल में ॥
मदन मोहनी मुरत लालकी, अरे ग्वालकी ललनामुदितनिहार।
जनम्यो गोकुल में ॥
याछबिको सुरनरमुनि तरसत, अरे प्रेमरत मथुरादासबलिहार।
जनम्यो गोकुल में ॥

[तथा जयपुर की भाषा में]

(१) गोकुल छाईरी बधाई चालो नागरी ए ॥
लालो जायो जसुमत रानी, वो छै बड़ भागन म्हे जाणी।
धनछे नन्द की धिराणी, सब गुण आगरी ए ॥ १ ॥
बालक सुन्दर रूप निहार, हुई छूं तन मन से बलिहार।
अरी तू मतना करे अबार, बेगी जागरी ए ॥ २ ॥
नंदजी फूला फिरै सुजान, वेतो बूढा होगया ज्वान।
देवै मन मांगा छे दान, दर्शन मांगरी ए ॥ ३ ॥
कान्हो पौड्यां पौड्यां झांकै, गोप्यांओड़ी मुलके ताकै।
गोप्यां झांकती न थाकै, धन धन भागरी ए ॥ ४ ॥
ऊंकी आंखडली में कामन, मन हर लेवे छै मन भावन।
महलां चालस्यांरी गावन, मीठी रागरी ए ॥ ५ ॥

मथुरा राखै दर्शन आस , ऊंकी आज बुझैली प्यास ।
भारी उमंग हुलास , चरणा लागरी ए ॥ ६ ॥

(छटी के उत्सव का पद)

(१०) आज छटी आज छटी आज छटी है।
नंद भवन नृत्य करण आई नटी है ॥
नाचैं ताथेई थेई नूपुर बाजैं ।
साजे सब साज रुचिर ठाठ ठठी है ॥
गोद लेत हेत भरी लाल कौं मैया ।
पूज छटी दान देत नाहि हटी है ॥
कोई करै न्योछावर कोई रोचना ।
आरत्यो लिये सुलोचना वो डटी है ॥
रूप मधुरताई पाय गोपियां छकी ।
आज ही छटी की ये मिठाई बटी है ॥
आई कछु लेन नटी मन को दे चुकी ।
निज घर के गमन काज नट से नटी है ॥
पूतके तो पाऊं पालने में ही दीखैं ।
महिमा मथुरेश की भली प्रघटी है ॥

[ग़ज़ल राग सोहनी]

पालना

(११) पालने में झूलते श्री नन्द के फ़रज़न्द हैं।
तम के नाशक अज नरोत्तम प्रेमधज ब्रज चंद हैं ॥

प्यारी प्यारी आपकी चितवन है मन की मोहनी ।
क्या हसन है मंद जिसने डाले भारी फन्द हैं ॥
पालने में लाल ने मोहित किया ब्रजबाल को ।
है कमाल इस बालपन में सीखे क्या छल छंद हैं ॥
मौन धारे मा झुलाती है विराजी भौन में ।
कौन कह सकता है दिल में उसके जो आनन्द है ॥
वाह क्या पलना है जिसको देख ललना हैं फ़िदा ।
देखे बिन कल ना पडै क्यों इसमें आनन्द कन्द है ॥
सारे भक्तों को मुबारिक धन्य ये भादों का मास ।
जिसमें श्री मथुरेश प्रघटे धन्य धन श्री नंद हैं ॥

॥ तथा ॥

(१२) वलैयां लूं पालने हरि झूलै ॥
कुंवर निरखवेको दूरसै सिधाई लांघत ताल तलैयां ॥ ब० ॥
रतन जटित सोहै पालनो चन्दनको ताबिच नंद ललैया ॥ ब० ॥
मथुरा दृगन छायो सांवरो रसीलो जीवन मूल फलैयां ॥ ब० ॥

(तथा)

(आई बदरियां कजरियां री गुइयां, इसके वजन पर)

(१३) मोरी नज़रियां समायो सांवरिया ॥

जसोधा के भयो ललना , विराजै आंगने पलना ।
परै देखे बिना कल, ना , सुहाता है वहीं चलना ।
भारी उमाइ ये सारी नगरिया ॥ मोरी० ॥
मनोहर आन लालन की , हरै सुध गोप ग्वालन की ।
जो महिमा व्रज की बालन की , कहां सब लोक पालन की ।
धन हैं जो याको लड़ावैं गुजरियां ॥ मोरी० ॥
अजब चितवन रसीली है , सुरत क्या ही रँगीली है ।
अदा हर इक नवीली है , मधुर मूरत हँसीली है ।
मथुरा कहै ये तौ रस को है दरिया ॥ मोरी० ॥

[मांड बधाई]

(१४) उमङ्ग पधारियां वे व्रज जन नारियां नंद द्वार ।
तन मन वारियां वे हरि छवि निरख मोद अपार ॥
गावैं दे दे तारियां वे रस भरे गीत मङ्गल चार ।
ओढे रँग सारियां वे सोहैं व्रज कामिनी सुकुमार ॥
कहैं सुनि जसुमति रानी वाह २ मिली है निधि मन मानी वाह २
सुघर तैं ढोटा जायो—,, सबन के मनको भायो—,,
सलौनी सूरत याकी—,, मोहनी मूरत जाकी—,,
नंद जू अति बड़ भागी—,, प्रालब्ध उनकी जागी—,,
आनंद खुमारियां वे छके मद माहिं लख दिलदार ।
मुदित निहारियां वे छवि मन मोहनी रस सार ॥

गुनीजन देत बधाई वाह २ कामना मन की पाई वाह २
दान दीजै मन भायो—„ त्रिलोकी पति घर आयो—„
भये सुर सभी निहाला—„ करैं नृत गोपी ग्वाला—„
मची भारी दधि कादौं—„ मास धन धन ये भादौं—„
मथुरा बलिहारियां वे बोले हरषात जय जय कार।
सुरत विसारियां वे पायो मन भावतो भरतार॥

(१५) **(भांड बधाई)**

लालजीको जन्म भयो जगमें आनंद छयो वाह २ है अजी वाह २ है।
दुख सोच दूर गयो पायो रस मोद नयो—„ „ „
आये ब्रज गोप धाय हरषे सब दर्स पाय—„ „ „
फूले तन ना समाय मुंह मांगो दान पाय—„ „ „
बाजत निशान भेरि नाचैं जन घेर घेर—„ „ „
करती है वार फेर नारी नर टेर टेर—„ „ „
गोकुल में धूम मची सुर नारी धाय रची—„ „ „
मथुरा रस रंग रची राजी सुरनाथ शची—„ „ „

राम कृष्ण जन्म की अभेद बधाई।

॥ राग सारंग का दादरा ॥

(१६) आज बधाई आज बधाई। प्रघटे हरि तृभुवन सुखदाई।

आज वधाई आज वधाई ॥

१–शेश महेश शारदा नारद जेह सुमिरैं सोई प्रघटे आई ।

आज वधाई आज वधाई ॥

२–मरजादा पालक रघुनायक लीला हेत भये कुंवर कन्हाई ।

आज वधाई आज वधाई ॥

३–छवि ललाम श्रीराम गुशाँई शोभाधाम श्याम यदुराई ।

आज वधाई आज वधाई ॥

४–दुष्ट दलन धनु धारी रघुवर कृष्ण मोदप्रद, वेणु वजाई ।

आज वधाई आज वधाई ॥

५–जनक नन्दिनी प्रिया राम की राधा वपुधर कृष्ण रमाई ।

आज वधाई आज वधाई ॥

६–कौशल्या जसुमत बड भागिन, राम कृष्ण दोउ गोद खिलाई ।

आज वधाई आज वधाई ॥

७–श्री अवधेश जन्म अति पावन सोहि मथुरेश रूप दरसाई ।

आज वधाई आज वधाई ॥

॥ तथा ॥

॥ राग श्याम कल्यान ॥

(१७) वेद पावै भेद नाहीं, आवै जो न ध्यान माहीं ।

ऐसो वो अजन्मा साईं, जग प्रघटायो है ॥

योगिन समाध त्यागी, हिये अभिलाष जागी ।

वोही बड भागी, जाने रूप लख पायो है ॥
लोचन रसीले रूरे, भरे हैं सुधा से पूरे।
रस माहीं चूरे, जिन जगत लुभायो है ॥
सांवरो सलौनो अंग, लाजत अनङ्ग जासै।
चितवन माहिं याके, कामन धरायो है ॥
धर्म रखवारे प्यारे कौशल्यादुलारे धन्य।
प्रघटे आनन्द तीन लोक मांहि छायो है ॥
वोही मथुरेश कृष्ण रूप धार आयो ब्रज।
मंगल अपार छायो आनन्द बधायो है ॥

(तथा)

(ब्रज की लता लागै प्यारी, इसके वजन पर)

(१८) जग में छयो है आनन्द, हरि लीनो अवतार ॥जग०॥
धरणी दुखारी, पुकारी, पुकारी जब आतुर २।
बर दीनो भरतार ॥ ॥जग०॥
करुणा निधाना, सुजाना, हरी भगवाना २।
लीयो नरतन धार ॥ ॥जग०॥
सुरगण मगन मन, गगनसे सुमन बरसाये २।
असुरन मानी हार ॥ ॥जग०॥
सुन्दर सलौना, सोहन मन मोहन २।
जाकी सोभा है अपार ॥ ॥जग०॥
रघुबर मनोहर, दया कर, रुचिर तनु धारी २।

वोही नन्द के कुमार ॥ ॥जग०॥
राघौ धरम की, करम की, वो पाली मरजादा २।
जस को है नहि पार ॥ ॥जग०॥
लीला बिहारी, मुरारी, कृष्ण वपुधारी २।
कियो प्रेम को प्रचार ॥ ॥जग०॥
दोऊ दयालू, कृपालू, भक्तन प्रतिपालू २ ।
मथुरा दास वलिहार ॥ ॥जग०॥

बधाई श्रीकिशोरीजीके जन्मोत्सव की।

(येही राम लखन जो मुनि संग आये हैं री, इसके वजन पर)

(१) मङ्गल वधाई व्रज मण्डल में छाई है री ॥
कीरति ने कन्या जाई, देख वाकी सुन्दर ताई।
अति ललचाई, रति कामिनी मदन की ॥ १ ॥
रमा इन्द्रानी और, शंभु की भवानी गौर।
निरख लजानी छवि, राधिका वदन की ॥ २ ॥
रतन अमूले दान, दीने नृप वृष भान।
रिद्ध सिद्ध दासी मान, लाडिली चरण की ॥ ३ ॥
अष्टमी उजेरी रात, भादों ऋतु वरसात।
सामग्री सुहात सव, ताप के हरण की ॥ ४ ॥
रावल पुरी के वासी, धन्य धन सुख रासी।
पाई राधिकासी जोत, मोहिनी दृगन की ॥ ५ ॥

तीन लोक जस होय, हरि याके बस होय।
मथुरा बिहंस, भाखै कुण्डली लगन की ॥ ६ ॥

[तथा]

अरे हारे दिलजानीरे तूनोंबे मतवारारे, इसके वजन पर

(२) अजी राजा बृषभानजी बधाई हम लाई जी ॥
तुम्हरे भाग को सुरहु सरा हैं।
राधे सी कन्या है पाई जी ॥ अजी राजा० ॥
रानी कीरत हु धन है बखानी।
श्यामा सुता जाने जाई जी ॥ अजी राजा० ॥
ब्रज में आनन्द छयो है घर बाहिर।
लाये देव बधाई जी ॥ अजी राजा० ॥
मुरत छबीली सुरत रसीली।
तुरत हिये में समाई जी ॥ अजी राजा० ॥
ग्ररह लली के ऐसे सुने हैं।
बिष्णु करै सेवकाई जी ॥ अजी राजा० ॥
मथुरा आपसे यही दान मांगै।
दीजिये दरस दिखाई जी ॥ अजी राजा० ॥

[तथा]

नाटक की चाल में

(घनश्याम घनश्याम घनश्याम, इसके वजन पर)

(३) बृषनाभ, बृषभान, बृषभान, बृषभानकुंवरि के

दर्शन करके जन्म सफल कर प्यारी ॥ वृषभान० ॥
पुरी रावल अधिक सुहाई , वहां घर घर बजत वधाई ।
तहां कीरत कन्या जाई , जाकी अनुपम सुन्दरताई ।
दरबार के साज सजाये , वहु भूप न्योछावर लाये ।
सतकार महीप कराये , अति मंगल मोद मनाये ।
वाजत निशान, होय नृत्य गान, करैं पान आनंद सुधारी ॥ वृष० ॥
रणवास में रानियें धाई , पाई कीरत से पहुनाई ।
लख राधिका मुख दुख भूली , अति आनन्द से मन फूली ।
कोई देत असीस सयानी , कोई रूप ही देख लजानी ।
कोई मुख पर देत डिठौना , कोई रक्षा करै कर टौना ।
जाके मथुरा पास, अति मन हुलास, दियो राई लोन उतारी ।
वृषभान, वृषभान, वृषभान० ॥

[तथा]

(जयपुर की भाषा में)

(१) जाई कीरत छे बाई मन भावनी हो ॥
लेकर चालांरी वधाई , कांई डोले छे उमाई ।
म्हारा जीवडा मैं छाई , हुलसावनी हो ॥ जाई० ॥
दर्शन कर मन परसन करस्यां, ऊंकी छव मन मांहीं धरस्यां ।
तांना मीठी सुरसूं भरस्यां, गास्यां लावनी हो ॥ जाई० ॥
सुन्दर श्यामा भानु दुलारी , ऊंकी झांकी छे अति प्यारी ।
ना कोई तीन लोक में नारी, इसी सुहावनी हो ॥ जाई० ॥
लछमी दर्शन करवा आई , गौरी ब्रह्माणी छे धाई ।

शारद मन ही मन पछताई, भई लजावनी हो ॥ जाई० ॥
राजा बांटे रतन अमोले, देवे मन भायो बिन बोले।
मांगे कीरत रानी हौले, गोद खिलावनी हो ॥ जाई० ॥
दीने न्योछावर में हार, कोई भूषण बे सुम्मार ।
मथुरा मन माणिक दियो वार, मुख दिखलावनी हो ॥जाई० ॥



(राग सारंग का दादरा)

(तोरे सांवरिया ने मारी नज़रिया, इसके वजन पर)

(५) परमानंद मगन सुध भूली, पैयां परूं मोरी बैयां गहोरी ।
भानु महीप की कीरत रानी, जाई सुता मन हरष छयोरी ॥
निरख वदन वाको सुधनहिंतनकी, सदनचलन मोसे काहेकहोरी।
देव वधू दर्शन को धाईं, देख रूप हियो चकित भयोरी ॥
सुर मुनि सिद्ध न रीत निबाहें, छांड्यो न चाहें भानु की पौरी।
निरधन जिम वहु संपत पाई, तिम सबको मन उमग रह्योरी ॥
धीरज़ त्यागो सब ब्रज बासी, प्रेम की रज इक एक बँध्योरी।
मथुरा कहे अनादि अज़न्मा, भक्तन हित लियो ज़नम किशोरी।



॥ तथा ॥

(बना म्हाने प्यारो लागेए, इसके वजन पर)

(६) बधाई देने सखियां धाई है (एमाए)
कीरत कन्या जाई ॥ बधाई० ॥

१—इसौ दिस मंगल छायो हे (एमाए)
दंगल गोपी गोप उमग बरसाने आयो हे ॥
२—नाना विध बज रहे बाजे हे (एमाए)
राजत सुख के साज निरख सुर संपत लाजै हे ॥
३—लाडली मुख की सोभा हे (एमाए)
कमला निरख लजात उमा मन छायो लोभा हे ॥
४—देह सुध भानु भुलानो हे (एमाए)
आनद उर न समात लुटायो खूब खजानो हे ॥
५—धन्य तिथि वार समैया हे (एमाए)
मथुरा व्है बलिहार लली की लेत वलैया हे ॥

॥ तथा ॥

(करहैयां न टूटे हमार) इसके वजन पर

(७) चलौ रावल में देखैं बहार लडैती जन्मी यहां ॥
महीप भानु ने ठाना खुशी का है दरबार ।
नगर में होरहे घर घर में भारी मंगल चार ॥
जो चाहे सोही मिलै है खुला हुवा भंडार ।
मची है धूम कि हर सूम भी हुवा दातार ॥
भई कीरत की कीरत अपार ॥ लडैती० ॥१॥
वो मन की मोहनी कन्या है ये हुवा मशहूर ।
जमाल देख के लजयातीहै परी क्या हूर ॥

जलाल क्या है कि कहिये उसे सरापा नूर ।
उसीके नूर का दुनिया मैं है ये सारा ज़हूर ॥
वोही जीवों की जीवन अधार ॥ लडैती० ॥२॥
जडाऊ पालने मैं मा उसे झुलाती है ।
वो मंद मंद कभी प्यारी मुसक्राती है ॥
जिधर कौं हंस के वो प्यारी नज़र उठाती हैं ।
बनाके दासी हिये की कली खिलाती है ॥
किया मथुरा ने दिल कौ निसार ॥ लडैती० ॥३॥

[तथा]

आई बदरियां कजरियां रीगुइयां इसकेवजनपर ।

(८) छाई नगरिया सुघरियां बधैयां ॥

१—सज़ी बृषभान की नगरी , हैं उमगी सुन्दरी सगरी ।
मटकती नाचती गाती , चली महलौं मैं इतराती ॥
बोलैं दिखादो दुलरियां बधैयां ॥ छाई० ॥
२—लखा जब लाडिली छब कौं , हुई बस मूर्च्छा सब कौं ।
वो बोली होश मैं आके , ये बानी उठके घबराके ॥
लागै न याकौ नजरियां गुइयां ॥ छाई० ॥
३—गगनसै हैं सुमन बरसैं , मगन नभ देवगण दरसैं ।
ये श्यामा आदि कारन है , यही निज बन बिहारन है ॥
मथुरा दया की ये दरियाहै गुइयां ॥ छाई० ॥

[तथा]

(९) छबि कौ निरखन देरी महा रानिया, प्यारी राधा है रस । अवतार ॥ महा० ॥

१–एक तौ पायो याने रूप मनोहर दूजे ये सब गुण खान ॥
तीजे हरी की मनभावनी याकौं गावत वेद पुरान ।

२–सुरत है याकी मन मोहनी प्यारी मुरत है रस भंडार ॥
कोट भानु सम तेज है यामें महिमा अपरं पार ।

३–निगम न पायो याको भेदहै जी शारदा रही लजाय ॥
ब्रह्मादिक सुर थकरहे याको पार सके नहिं पाय।

४–धन २ श्रीबृषभानु हैं अरु धन तुम कीरत माय ॥
देत बधाई मन हरषे यापे मथुरा बल बल जाय ।
॥ महा० ॥

(पालने में बिराजी हुई श्री किशोरीजी की बधाई)

(१०) पालने झूलरही भानु दुलारी प्यारी ।
उसकी छब देख अमर नारिहैं सारी वारी ॥ पालने० ॥
जगमगाताहै वो रतनों से जडाऊ पलना ।
जिस में ललना मानो सूरज है ये कायाधारी ॥ पाल० ॥
रानी कीरत है झुलाती न समाती तन में ।
है मगन अपनी दुलारी कौ निरख बलिहारी ॥ पाल० ॥
देख सुख पाती है ललचाती कोई लजियाती ।
रूप जोबन की जो गरबीली है ब्रज की नारी॥ पाल० ॥

आज नृप भानु भवन भानु भवन सिद्ध हुवा
जिस्में प्रघटी है तिहूंलोक की ये उजियारी ॥ पाल०॥
वारी वारी से मगर धीरे हिलाओ पलना ॥
मथुरा ये वारी लली प्यारी है अति सुकुमारी ॥ पाल०॥

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीकिशोरीजी के जन्म उत्सव की खबर सुनकर
श्रीनारदजी हरिगुण गाते, बीन बजाते
यह पद गाते हुए आते हैं ॥

(११) ॥ पद ॥

सरकार हमारी राधे, सरकार हमारी राधे, अजी राधे राधे राधे ॥ सर० ॥ १ ॥ सुंदरी न उनसम कोऊ, किन्नरी परी मन छोहू, छविरूप अनूप अगाधे ॥ सर० ॥ २ ॥ रस रास बिहारिनि स्वामिनि, कामिनी हरि की भामिनि, हरि ताहि सदां आराधे ॥ सर० ॥ ३ ॥ मुनि वृन्द ताहि नित ध्यावैं, सब रसिक जासु जस गावैं, वो मेट देत भवबाधे ॥ सर० ॥ ४ ॥ मथुरेश सदां करजोरै, रस बस जाके करत निहोरे, रहो सदां भक्त हित साधे ॥ सर० ॥ ५ ॥

(१२) दोहा (इन्द्र सभा की चाल में)

१ प्रेम विशारद जानिये, नारद मेरो नाम ॥
श्रीहरि जस के गान बिन, नहीं मुझे आराम ।

२ बिचरत मैं जित तित सुन्यो, गगन मांहि रस गान ॥
जन्म लियो श्रीराधिका, रूप रास रस खान ।
३ भयो मोद मेरे हिये, बिन दर्शन कल नांहि ॥
धायो हूं आकाश तैं, व्रज मंडल के मांहि ।
४ धन्य भूप वृषभानु हैं, धन कीरतदा माय ॥
धन रावल जन्मी जहां, लली लाडिली आय ।
५ देव वधू आकाश में, करैं मंगला चार ॥
लाली के दर्शन करूं, यह मम हृदय विचार ।

[वार्ता]

आहा आज को दिन अति धन्य सुहायो है । त्रिलोकी में आनंद छायो है ॥
देव कन्या और गंधर्व आकाश में गा रहे हैं । विमानों में पुष्प बरसा रहे हैं ॥
रावल पुरी आज कैसी सजी है । अमरावती की सोभा लजी है ॥
यह वृषभानु नन्दन कैसो सज्यो है । त्रिलोकी को दुख याहि देख दूर भज्यो है ॥
जाचक जन मुख मांगे दान पाय रहे हैं । रंक हु दान पाय धन लुटाय रहे हैं ॥
अब मैं हूं दरस की भिक्षा मांगूं हूं । लली के प्रेम में अनु रागूं हूं ॥

इसके अनन्तर पद नम्बर (९) गाना चाहिये

(१३) (तथा पद)

लली को निरखन देरी कीरतदा लली को०— यह तो लाडिली सुख कारणी जग तारणी राधे ॥ अव्वल तो किशोरी श्यामा रासेश्वरी, दूजे रूप निधान ॥ तीजे तो प्यारी मन मोहनी याने मोहे श्याम सुजान ॥ १ ॥ यहतो०

अव्वल तो हितकी कारणी , दूजे हरि सों हेत ॥ तीजे गोप कुमारिका दान कान कौं देत ॥ २ ॥ यहतौ० ॥ भक्त हेत अवतार मानोहर तारे भक्त अनेक ॥ श्रीनाथदास गुण कहांलों वरणौ लीला ललित बिशेष ॥ ३ ॥ यहतो०

---

(१४) ॥ श्रीकिशोरीजी का पालना ॥

कसूभी की चाल में ।

पलनेमें झूलैं वो झूलैं लडैती राधा प्यारी ॥ २ ॥
बृषभानु की दुलार ॥ ॥ झू० ॥
पलनो जडाऊ जडाऊ महलोंमें अति सोहै ।
मोहैं लख ब्रज नार ॥ झू० ॥
नारी बिराजैं बिराजैं बिराजैं हुल सानी ।
मानी खुशीहै अपार ॥ झू० ॥
मुखडा ललीको २ लुभावनो जी को ।
अति नीको सुकुमार ॥ झू० ॥
चितवन है प्यारी २ मनों की हरने हारी ।
भारी यामें रस सार ॥ झू० ॥
पलनो हिलाओ हिलाओ हिलाओ होले होले ।
खोलै अंखियां कुमार ॥ झू० ॥
मथुरा निहारे निहारे आनंद उर धारै ।
डारै तन मन वार ॥ झू० ॥

---

(१५) असीसका पद (विहाग)

चिरजीवौ सुख रास लाडिली चिरजीवौ सुख०

१ नित्य बिहारिन हरि सुख कारिन प्रेमानंद विलास ।
लाडिली चिरजीवौ सुख० ॥

२ शरणागत रंजनि दुख भंजनि हिय विच परम हुलास ।
रसिकन जीवन प्राण स्वामिनी करुणा दया निवास ।
लाडिली चिरजीवौ सुख० ॥

३ चिरजीवहु वृषभानु कीरतदा सखि मंडल सुख वास ।
मंगल मोद सहित ब्रज मंडल जब लग धरणि अकास ।
लाडिली चिरजीवौ सुख० ॥

४ रहै अधीन सदा हरि याके रिध सिध नित हीं पास ।
मधुराकि स्वामिनि छवि रस धामिनि पूरिये रसिकन आस
लाडिली चिरजीवौ सुख० ॥

यह गाकर नारदजी प्रणाम करके पधारजाते हैं



(१६) ॥ श्रीराधा जी के पालने का पद ॥

(नैना लगेरी , उनसेरी आली) इस के वज़नपर

कलना परैरी ललना लखे बिन ॥

१ भानु कुमारि सुरत रत नारी । पलना में प्यारी मनकौहरैरी ॥
कलना परैरी ललना०

२ गात छवीले अधर हँसीले । नैना रसीले मद से भरैरी ॥
कलना परैरी ललना०

३ रसकीये पुतरी रसिक हेत उतरी। गुन अदभुतरी न जानपरैरी ॥ कलना परैरी ललना०

४ मथुराकी स्वामिन हरिकी हैभामिन। छविको कृपाविन उरमें धरैरी ॥ कलना परैरी ललना०

(१७) तथा पालना श्रीलाडलीजी का

॥ जराछब दिखा के वो जादूगर है नज़र में ० इम के वजन पर ॥

महारानी कीरत की कुंवर वोसुघ है मन को लुभा रही ।
नया जलवा आज दिखा रही है सभौं कौ रसमें छका रही ॥
महारानी कीरत की कुँवर०

१—प्रघटी हैं भक्तों के काज यह, हैं कृपा की भारी जिहाज यह । धन धन छटीका समाज यह, कि खुशी जगत में है छारही ॥ महारानी कीरत की०

२—चितवन है कैसी वो रस भरी, मुलकन है प्रेम सुधा झरी, अस झांकी जिसने हिये धरी ,उसे चाह और की ना रही ॥ महारानी कीरत की०

३—पलने में प्यारी है सोहती, चर अचर के मन मोहती, जिसे इसके चरणों में हो रती, उसे मुक्ति माल ही क्या रही ॥ महारानी कीरत की०

४—हैं प्रिया ये हरि मथुरेश की, गोलोक बासी हमेश की, धन महिमा है ब्रज देश की, जहां प्यारी दर्स दिखा रही ॥ महारानी कीरत की०

(१८) ॥ मांड वधाई श्रीकिशोरीजी के जन्म उत्सव की ॥

तन मन वारियां वे लली छब निरख सुर पुर नार ॥
मुदित पधारियां वे नृप वृषभानु भवन मंझार ॥
नाचती अपसरा वे गावती गीत मंगलाचार ॥
गंधरप कन्यका वे अति ही सुहावनी सुकुमार ॥
कहैं सुनिये महारानी वाह २ धन्य तुम कीरत रानी वाह २
लली गुण रूप निधानी ,, राधिका प्रेम प्रधानी ,,
भानु नृप अतिवड भागी ,, प्रालवध उनकी जागी ,,
देव गण चिन्ता त्यागी ,, राधिका पद अनु रागी ,,
हम बलि हारियां वे अनुपम राधा रूप निहार ॥
देत वधाइयां वे हिल मिल सारी ब्रजकी नार ॥
आनंद मनाइयां वे पाय निध रूप अपरम्पार ॥
तता था ताथा थेई वाह २ तान ले ले रस देई वाह २
पगन में नूपुर बाजें ,, पखावज मधुर अवाजें ,,
ठुमक ठुम ठुम २ नाचैं ,, प्रेम रंग माही राचैं ,,
गुणी जन गाय रिझावैं ,, दान मन माने पावैं ,,
हिये छवि धारियां वे हरषत मधुरा दास तिहार ॥

---

(१९) ॥ तथा ॥

लाडिलीको जन्म भयो जगमें आनंद छयो वाह २ हैअजीवाह २
दुःख सोच दूर गयो पायो रस मोद नयो—वाह २ है० ,, ,,

आये ब्रज गोप धाय हरषे सबै दर्स पाय—वाह २ है० (,, ,,)
फूले तन ना समाय मूंह मांगे दान पाय—वाह २ है० ,, ,,
बाजत निशान भेर नाचै जन घेर घेर—वाह २ है० ,, ,,
करती हैं वार फेर नारी नर टेर टेर—वाह २ है० ,, ,,
रावल में धूम मची सुर नारी धाय नची—वाह २ है० ,, ,,
मथुरा रस रंग रची राजी सुर नाथ शची—वाह २ है० ,, ,,

(२०) (छटीका पद राग यमन कल्यान)

राधिका सी लाली, दूजी देखी नाहि आली आली, छवि है निराली, वाकी नैनन समाईगी ॥ राधिका०— ॥
पूजत छटी है मैया, मोहर रुपैया बांटै, मैंतो ले वलैयां, वाकी कोटि निधि पाईगी ॥ राधिका०— ॥
लोचन सुडौल बांके, गोरे हैं कपोल वाके, भृकुटी कमान जैसी, मदन की गाईरी ॥ राधिका०— ॥
सुआ कीसी नाक सोहै, मुख द्युति मन मोहै, विम्बा फल जैसी सोहै, अधर ललाईरी ॥ राधिका०— ॥
मंद मुसिकान प्यारी, मन की हरन हारी, दृष्टि रत नारी लखि, सुधि बिसराईरी ॥ राधिका०— ॥
नखन प्रभापै जाके, कोटि रवि चन्द्र वारूं, ब्रह्म ज्योति वार डारूं, अजब निकाईरी ॥ राधिका०— ॥
महिमा अपार वाकी, शारदा हू गाय थाकी, करै मथुरेश याकी, पद सेव काईरी ॥ राधिका०— ॥

(२१) किशोरीजी की छटीकी गोठमें भोग का पद॥

आज छटी की गोठ सुहाई

श्रीवृषभानु कुंवर बर जन्मी पूजी छटी कीरतदा माई।

आज छटी की गोठ सुहाई ॥

रावल ग्राम के सब नर नारी प्रजा राज घरजेमन आई।

आज छटी की गोठ सुहाई ॥

ब्रज भर के मुखिया ग्रामनतें धाये सभन पाई पहुनाई।

आज छटी की गोठ सुहाई ॥

जीमन हेतु बने बहु विंजन नानाविध पकवान मिठाई।

आज छटी की गोठ सुहाई ॥

पेड़ा मोदक पूरी कचौरी तरकारी बहु भांत सुहाई।

आज छटी की गोठ सुहाई ॥

प्रथम भोग धरि श्रीठाकुर के योंगावत सब ध्यान लगाई।

आज छटी की गोठ सुहाई ॥

---

(२२) ॥ रसिया की लयमें भोग का पद ॥

नारायण भोग लगाउ लक्ष्मी पति प्यारे ॥

छप्पन भोग छतीसौ व्यंजन अरे गुसैंयां रुच २ भोजन पाउ ॥ १ ॥ लछमी० ॥ गऊ लोक बासी प्रिया प्रीतम अरे सजनवा रुच २ भोग लगाउ ॥ २ ॥ लछमी० ॥ श्री गोपाल लाल श्यामा संग अरे युगलवा हिल मिल हँस २ खाउ ॥ ३ ॥ ल० ॥ भक्ति के भूके प्रेम के प्यासे अरे मोहनवा शुध्द चहत तुम भाउ ॥ ४ ॥ लछमी० ॥ साग पात अति प्रेम प्रीत से, भक्ति

को रुच रुच खाउ ॥ ५ ॥ लछमी० ॥ दुर्योधन की मेवा त्यागी—बिदुर साग मैं चाउ ॥ ६ ॥ लछमी० ॥ कर्मा की खिचरी रुचि से पाई—राख्यो प्रेम प्रभाउ ॥ ७ ॥लछमी०॥ प्रेम से पाये सुदामा के तन्दुल—प्रभुता को कियो निभाउ ॥ ८ ॥ लछमी० ॥ आप की संपत आपके आगे—धरैं शुद्धकर भाउ ॥ ९ ॥ लछमी० ॥ तुम्हैं पवाय प्रसादी पावैं अरे रसिकवा वाहि से तुमारो चाउ ॥ १० ॥ लछमी० ॥ श्रीमथुरेश दीन हित कारी अरे बिहारी भोजन पाय अघाउ ॥ ११ ॥ लछमी पति प्यारे० ॥

---

(२३) ढाढी का वचन [दोहा]

बन्दौं हरि गुरु पद कमल, बिमल सुजस सुखमूल ॥
ढाढी धायो उमंग सों, सगुन भये अनुकूल ॥ १ ॥
सूरज बंश प्रदीप जो, भूपति श्रीवृषभान ॥
ढाढी आयो तेहि भवन, पावन कौं सन मान ॥ २ ॥
त्रिभुवन वंदित राधिका, जन्म लियो सुख रास ॥
भानु सुता के दरस की, बाढी हिये अति प्यास ॥ ३ ॥
प्रेमाभक्ति प्रचारणी, प्रगटी रूप निधान ॥
श्रीराधा बाधा हरण, रसिकन जीवन प्रान ॥ ४ ॥
तासु दरस की लालसा, वढी हियो अकुलाय ॥
ढाढी वर चाहत यही, सज्जन सभा रिझाय ॥५ ॥

(२४) श्रीकिशोरी जी के जन्म की बधाई ढाढी की तरफ़ से ॥

मैं ढाढी वृषभानु भूपको कुंवर जन्म सुन धायो ।
घर २ मंगलचार मनोहर निरख हियो मगनायो ॥
जो आदि शक्ति चराचर जगत की कारन है ।
असुर विनाशिनी देवों की दुख निवारन है ।
दया की खान परम प्रेम की प्रचारन है ।
ये राधिका वोही गोलोक नित विहारन है ।
ब्रह्मादिक देवन अरु वेदन पार न याको पायो है ॥
हरी जनों को ये आनंद देने हारी है ।
इसीके वस में परम पुर्ष वो मुरारी है ।
इसी ने भक्तों की सारी विपत निवारी है ।
ये प्रेम प्रीत की मूरत लली तिहारी है ।
धन्य २ वृषभानु महीपति तुम्हरो जस जग छायो है ॥
लडैती जन्म की घर घर वजै वधाई है ।
ये धन घड़ी है खुशी तीनलोक छाई है ।
उमंग अंग में हरजीव के समाई है ।
हुए निहाल मनो कामना जो पाई है ।
मथुरा याकी कृपाको मँगता वरपायो मनभायो है ॥



[२५] ॥ रसिया की चाल में ढाढन का गाना ॥

ढाढनिया भरी उमंग ॥ धाई भानु महल ॥
१ लेहु वधाई कीरत माई ॥ अररररररर–॥

बढ़े सुरस रस रंग— ॥ धाई०—

२ लाली जाई परम सुहाई ॥ अर०— " " ॥

वारूं कोट अनंग— ॥ धाई०—

३ प्रेम दृष्टिको धन मैं मांगू ॥ अर०— " " ॥

चढ़े प्रेम को रंग— ॥ धाई०—

४ सगरी संपत भक्तिकी चाहूं ॥ अर०— " " ॥

अरे गुसैयां चहूं न हस्तितुरंग ॥ धाई०—

५ आनंद तीनलोक में छायो ॥ अर०— " " ॥

भयो सकल दुख भंग— ॥ धाई०—

६ सुरत छबीली मुरत रसीली ॥ अर०— " " ॥

अरे ललीके लोचन नवल कुरंग ॥ धाई०—

७ राधा नाम हरै भौ बाधा— ॥ अर०— " " ॥

येतौ रहै सदा हरि संग— ॥ धाई०—

८ चरण कमल मकरन्द लुभाने ॥ अर०— " " ॥

मथुरा लोचन भृंग— ॥ धाई०—

[२६] (ढाढी ढाढिन के मिलकर गाने का पद)

नाचै २ रे वृषभानु दरबार । ढाढन ढाढी मोद भरे ॥ नाचै०-

ढाढन ढाढी मोदभरे ॥

१—रुपया न चाहैं पैसा न चाहैं । चाहैं २ जी ललना को दीदार ॥

ढाढन ढाढी मोदभरे ॥

२—गाऊं रिझाऊं नाचू मै रुचसों । पाऊं २ रे लली लख आनंद अपार ॥

ढाढन ढाढी मोदभरे ॥

३—लाली तिहारी जगत उज्यारी । प्यारी २ यह रसकी मूरतकुमार ॥

ढाढन ढाढी मोदभरे ॥

४—रसिकों की जीवन कीरत किशोरी । भोरी २ रे याको जानौ ननार ॥

ढाढन ढाढी मोदभरे ॥

५—कृपादया निधि वेदोंने भाषी । साखी २ रे मधुरा बलिहार ॥

ढाढन ढाढी मोदभरे ॥

(२७) ॥ ढाढी ढाढन का मिलकर गाना ॥
॥ रसिया की चाल में ॥

हां हां लडैती जन्म लियो । श्रीभानु भूप घर आय ॥
लडैती जन्म लियो ॥

मंगल छायो त्रिभुवन माहीं । अरे किशोरी छवि पर
मदन लजाय ॥ लडैती जन्म लियो ॥

ब्रज में घर घर बजत बधाई । अरे सुहाई अदभुत रूप
लखाय ॥ लडैती जन्म लियो ॥

सुर नारी याकी महिमा वरणैं । अरे कि हिल मिल रही
पुष्प वरसाय ॥ लडैती जन्म लियो ॥

ढाढी ढाढन नाचैं गावैं । अरे कि सबही मन इच्छा
फल पाय ॥ लडैती जन्म लियो ॥

मधुरा कहै राधिका छवपर । अरे मदन की सोभा रही
लजाय ॥ लडैती जन्म लियो ॥

(१)श्रीजानकीजीकी वधाई (कसूंभी की चालमें)

छाई वधाई २ जनकपुर मांही, जन्मी सीतासुकुमार ॥छाई०॥
वाजे नगरमैं २ वजैं द्वारे, नाचैं गावैं पुर नार ॥ छाई० ॥ १ ॥
राजा जनकजू २कनक लुटवाये, पन्ना मोतियन हार ॥छाई०२॥
लक्ष्मी भवानी २ ब्रह्माणी इन्द्रानी,लाजी रूपकौनिहार॥छाई०३
स्यानी वो ज्ञानी २ जनक महारानी,तन मन दियो वार॥छाई०४
पूजी छटीहै २मिठाइयां बटीहैं, शुभ घरियां विचार ॥छाई०॥५॥
पलने विराजी २ लली भई राजी, देखै आँखियां पसार॥छाई०६॥
मथुरा निहारे २ निरख मन वारे, या मैं दया है अपार ॥छाई वधाई जनकपुर मांही० ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥

---

(२) ॥ तथा वधाई ग़ज़ल की चाल में ॥

१ मिथला पुरी मैं मोद वधाई है छारही ।
प्रजा भरी उमंग से खुशियां मना रही ॥ मिथ०
२ सुन जानकी का जन्म मगन देव गण सभी ।
बरसारहे सुमन हैं अप्सराऐं गारही ॥ मिथ०
३ राजा जनक विदेह भी आनंद में मगन ।
सच मुच हुऐ विदेह ख़बर तन की ना रही ॥ मिथ०
४ पूंछौ न महारानी के मन की उमंग कौ ।
है लख किशोरी छब कौ ख़ज़ाने लुटा रही ॥ मिथ०

५ निर्धन रहा न कोई मूंहं मांगा दान पाय ।
दातारी लख कुवेर की संपत लजा रही ॥ मिथ०
६ घर घर में होरही है खुशी धूम धाम से ।
आनंद की धुनी है दसों दिस समा रही ॥ मिथ०
७ जो आदि शक्ति सृष्टि का कारन निगम कही ।
प्रघटी जनक भवन मैं है जलवा दिखा रही ॥ मिथ०
८ मथुरा भी हाथ जोड़ के मांगे कृपा का दान ।
दिलकी कली कौ हंस के लली है खिला रही ॥ मिथ०



(३) श्रीजानकी जी का पालना राग सोहनी ॥

पालने मैं झूलती श्रीजान की जग बन्दनी । छव अनूपम रूप निधि तिहु लोक आनंद कंदनी ॥ १ ॥ शेष शिव ब्रह्मादि सुर जिसका करैं सुमिरन सदा । विश्नु अर्धांङ्गी सोही प्रघटी जनक नृप नंदनी ॥ २ ॥ असुर बंश बिनाश कारणि सुरन ताप निवारणी । संत जन हित कारिणी धन धन्य दुःख निकंदिनी ॥ ३ ॥ प्यारी चितवन मन हरण बहु सुख करण अति मंद हास । बदन सोभा सदन श्रीमिथिलेश नृप कुल चन्दनी ॥ ४ ॥ पालने के हालने में वाल की सोभा विशाल । माल क्या वो उर्बसी अति सुगति मत्त गयन्दनी ॥ ५ ॥ मनका माणिक वारकै मथुरा कहै झांकी निहार । हो मुबारिक श्रीजनक तुम कौ ये मैथिल नन्दनी ॥



॥ श्री गंगा जी के जन्मोत्सव की बधाई ॥

(रंग भीना तेरी आँखड़ली गोरी पर जादू डारारे) इसके वजनपर

जय जय जय जगदम्बे गंगे भवभय भंगे अघ हारन । शिव अर्धंगे पावन अंगे विमल तरंगे सुख कारन ॥ जय० ॥ १ ॥
दरस परस तुम्हरे जो पाता गर्भ माहिं फिर नही आता ॥
भुक्ति मुक्ति दाता विख्याता माता आप तरन तारन॥ जय०२॥
अमृत हू तैं स्वाद तिहारो जल तिहूं ताप हरन हारो ॥
कबहु न देखै जम को द्वारो करे नाम तेरो उच्चारन ॥जय०॥३॥
जो जन गंगा मांहि नहाते तिन के पातक मिट जाते ॥
आते जाते फिर नहिं जग मैं धन्य २ जन उध्दारन ॥ जय०४॥
मुक्ति निशानी गंगा रानी महादेव की पटरानी ॥
सकुचानी निगमागम वानी महिमा बरणत मत वारन॥ जय५॥
सुख देनी वैकुंठ नसेनी पैनी पापन की छैनी ॥
श्रीमथुरेश चरण रति देनी प्रेम सुधा रस बिस्तारन ॥ जय ६ ॥

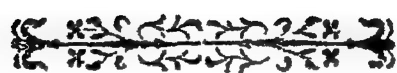


(२) ॥ तथा बधाई ॥

(बना म्हाने प्यारो लागै है) इसके वज़न पर ॥

भागीरथ अति बड़ भागी है (ए माए) जग तारन श्री गंग, संग जाके रथ के लागी है ॥ चहूं दिस छाई बधाई है

(ए माए) गगन मंडल रहे छाय , देव गण मन अनु रागी हे ॥ १ ॥ सदा शिव जटा वढाई हे (ए माए) सुर सरि सीस चढाय , भये वड़े जस के भागी हे ॥ २ ॥ पतित जन पाव न कारी हे (ए माए) कलि मल नासन हारि , सुजस गावैं सन्त बिरागी हे ॥ ३ ॥ध्यान तैं हि भव दुख भागै हे (ए माए) दरस परस अस्नान , किये जम चिन्ता त्यागी हे ॥ ४ मगन मन मथुरा गावै हे (ए माए) पावै हरि पद नेह , मात सै ये भिक्षा मांगी हे ॥ ५ ॥



(१) (अथ सांझी लीला के पद)

कान्ह वृषभानु भवन सांझीको देखन आये ।
इसहिं मिस गोरी किशोरीके हैं दर्शन पाये ॥ कान्ह ॥ १ ॥
प्यारीनें प्रीतसे इस रीत सजाई सांझी ।
विश्वकर्माभी जिसैदेख बहुत लजियाये ॥ कान्ह ॥ २ ॥
जल पै थल जैसा बगीचाहै बनाया क्याखूब ।
वनजो नंदनहै इसेदेख वोभी शरमाये ॥ कान्ह ॥ ३ ॥
बेल फल फूल सजीलेहैं वो पत्ते कैसे ।
खूबी कहनेको जुवां कौन कहांसे लाये ॥ कान्ह ॥ ४ ॥
प्यारी के हाथकी लख श्याम ये कारीगरियां ।
बोले अचरज से कहो किसनें ये गुन सिखलाये ॥ ५ ॥
हँसके प्यारीने कहा सुनियेजी प्यारे मथुरेश ।
आपकी दृष्टिनें येआपही गुन उपजाये ॥ कान्ह ॥ ६ ॥

---

(२) ॥ तथा पद पीलू बरवा ॥

सांझीहै सजाय रह्यो सांवरो सुजानरी ।
वारै मैया मोदभरी तनमनधन प्रानरी ॥ सांझी० ॥ १ ॥
नीरो पीरो सोसनी गुलाबी मोतिया सुरंग ।
नानाढंग रंग भरे रच्योहै विमानरी ॥ सांझी० ॥ २ ॥
देवनारी यामें बैठी सुन्दरी अनूठी सारी ।
चलत विमान मोहै प्यारी मुसकानरी ॥ सांझी० ॥ ३ ॥
व्रजके निवासी धाये रावलपुरी के बासी ।
दरसकी प्यासी नारी धाई चढ यानरी ॥ सांझी० ॥ ४ ॥

कीरतके संग प्यारी धाई है उमंग भरी

प्यारे जूनेआप कियो भारी सनमानरी ॥ सांझी० ॥ ५ ॥

प्यारी बोली आली येतौ नारिनको काम जानै ।

चातुरीको याहि देख त्यागिये गुमानरी ॥सांझी० ॥ ६ ॥

मोहे सुन प्रीतबानी प्यारी की गुमानी हरी ।

मथुरानेगाई मीठी सांझी कीथे तानरी ॥ सांझी० ॥ ७ ॥

---

(३) ॥ तथा पद ॥

सांझीखेल विचित्र बनायो, रचनाचतुर किशोरी रुचिसौं ॥सांझी०

चौरासी लख थंब कनक के, रचिके रतन जडाव जंडायो ॥

लता पतन से मंडित तरवर, विविध कुसुमयुत वागलगायो ॥

द्वारे पांच प्रवेश के राखे, घुसैजो मांहि रहै भरमायो ॥

पंथअनेक लुभावन जियके, गयो सो गयो वगद नही पायो ॥

जावैसोहि चकित रहजावै, चक्कर खाय रहै बिलमायो ॥

टिकट लेत जो हरि भक्तीको, सो निकसै अति मन उमगायो ॥

मथुरा कहै गहन ये सांझी, याको भेद रसिक जन पायो

वार्ता

इसपदका भाव यहहैकि महा माया. शक्तिने संसार जो रचाहै उसमें चौरासी. लाख योनियें जीवोंके भ्रमनाके वास्ते रचीहैं कामक्रोध लोभ मोह मद पांच दरवाजे बनाये इनके द्वारा प्राणी चौरासी में प्रवेश करै निकसना कठिनहै केवल वोही चौरासी से निकल सकताहै जिसने हरिभक्तिका टिकट (पास) प्राप्त करालियाहै अन्यथा विषय रूपी सुंदर बगीचेमें चौरासीमें चक्कर खाया करता है

(४) सांझी की ग़ज़ल

सांझी रची निकुंज में सखियों नें रसभरी ॥
चाक्रित हुए विचित्र छबी देख श्रीहरी ॥ सांझीरच०
मूरत बनाई प्यारी की सूरत लुभावनी ॥
आंखैं रसीली मान की हालत में रस भरी ॥ सां० ॥
विन्ती करैं चरन में पडे प्यारे सांवरे ॥
मूरत सजीली ऐसी तहां सामने धरी ॥ सां० ॥
चतुराई कलकी एक थी उस में अजीब यह ॥
नैनौं से युगल रूप के रसकी झरै झरी ॥ सां० ॥
रचना यह अजब देख के मोहे तुरत ही श्याम ॥
लख मान में प्रिया को सुरत तन की बीसरी ॥ सां० ॥
मथुरा निहोरै प्रेम दशा श्याम की निहार ॥
जैजै रसिक उचारैं कहैं धन्य यह घरी ॥



(५) तथा

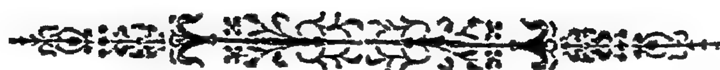
॥ परम रसिक महानु भाव डिप्टी राजा लाल जी रचित ॥

सांझी पूजत नवल किशोरी ॥ आगे पाछै भीर जुवतिनकी नवरुत साज श्रंगारे गोरी ॥ १ ॥ धूपदीप नैवेद्य मिठाई अगर तगर केशर ओर रोरी ॥ सखी बन आये मदन मोहन पिया, ओढे नवल पीतांबर खोरी ॥ २ ॥ भये मनोरथ सबके पूरण हँसहँस कहें आई नंद छोरी ॥दासी हरष उतारे आर्तो जीवनधन मेरी यह जीरी ॥



(६) तथा

आज सखी कुंजन में देखे नंदनदन वृषभान ललीरी ॥
सांझीके हित बीनत डोलत सुमन वाटिका कुसुम कलीरी ॥१॥
शोभा सागर नागरी नागर संग लिये दस पांच अलीरी ॥
चितवतही चित थिरनारह्यो सखी, प्रेम प्रीत कीवेलफलीरी ॥
निरखरही इकटक मोहन छवि नयनन अँसुवन धार चलीरी ॥
अंजुल भरभर कुसुमन वारूं प्यारी जोरी सुघर भलीरी ॥२॥



अथ रास बिहार के पद

(१) ॥ मांड ॥

॥ परदेसी ढोलारे आनतो जगाई बैरिन नींद में ॥ इसके तर्जपर ॥

नंदजीके छैलारे बंसी क्यों बजाई जमुना तीर पै ॥ नंदजीके० ॥
तेरी बांकी अलबेलीरे छैला झांकी प्यारी लागै जमुना तीर पै ॥
दोहा—पहलेतो मन हर लियो मधुरे वचन सुनाय ॥
ज्ञान ध्यान सिखवन लगे अब ये कैसो न्याय ॥
तेरी बानी कपटीलीरे छैला नीकी नाहिं लागै जमुना तीर पै ॥
„ झूंटे पति को सेवनो, सांचे पति के काज ॥
सांचो मिलैतो नारि कौं कहा उचित महाराज ॥
तेरी बुद्धि तौ नवेलीरे छैला हमैं ना सुहावै जमुना तीर पै ॥
„ गाढी रंगत प्रेम की, फीके सब उपदेश ॥
पालै सांची प्रीत को रसिक राज मथुरेश ॥
तेरीआंखतो रसीलीरे छैला तीर से चलावै जमुना तीर पै॥नंद०॥

(२) ॥ ग़ज़ल ॥

छुमक छुम छुम ठुमक ठुम ठुम नचैं घनश्याम बनवारी ॥
द्रगन ताता तता थेई तथा थेई थेई गत न्यारी ॥ छुमक० ॥
उधर बंसी की धुन सुन सुन हुवे रस मग्न सुर नर मुन ॥
इधर छुम छुम की आवाज़ैं अनोखे गुन भरी सारी ॥ छुमक० ॥
हज़ारों गोपियोंमें हर हाज़रों रूपको धर कर ॥
सभीके कर में कर देकर नचैं पूरन कलाधारी ॥ छुमक० ॥

क्रिया जव मान सखियोंने हुवे तत्काल अन्तर ध्यान ॥
सुता वृषभानु कोले कर जोथी सवमें अधिक प्यारी ॥ छुमक० ॥
प्रिया जी को हुवा जव मद हुए गायव निठुर वेहद ॥
किया जव सवने मद को रद तौ प्रघटे काम मदहारी ॥ छुमक० ॥
मदन लज्जित हुवा निर्धन शरण आया वो मोहन को ॥
चरन मथुरेश के पकडे हुवा भक्तीका अधिकारी ॥ छुमक० ॥

---

(३) ॥ पीलूबरवा ॥

(वांसुरी वजावै श्याम माधुरी लतान में इसके वजन पर)

वावरी वनावै कान्ह गाय मीठी तानरी ।
तू न जा गुमान भरी मेरी कही मानरी ॥ वा० ॥
वांसुरी मैं रागगावै प्यारो अनुराग भरे ।
सुन हौंतौ त्याग वैठीं लोक कुल कानरी ॥ वा० ॥
नारद हू शार्दा हु सुनि धुनि सुध भूले ।
भई सारि देव नारि रस में गलतानरी ॥ वा० ॥
योगिन समाध त्यागी लागी है लौ रागनी मैं ।
सव अनुरागि भये शंभु त्यागो ध्यानरी ॥ वा० ॥
घायल वनाय छोड़े जात मुख नाहिं मोडे ।
तोड़ें मथुरेश प्रीत ऐसी वाकी वान री ॥ वा० ॥

---

(४) चौताला (ध्रुपद)

आज व्रजचंद नन्द नन्दन आनन्द कंद ।
मधुर अमंद ऐसी वांसुरी वजाई है ॥ आज० ॥

सुरत बिसराई सी तुरत सिधाई नार ।
उलटे सिंगार धार अति घबराई हैं ॥ आज० ॥
प्रेम मतवारी सारी धाई बनवारी पास ।
प्रेमहीकी फांस गाढे बांधे यदुराई हैं ॥ आज० ॥
प्रेम उपदेश याही रीत मथुरेश दियो ।
गोपिनके संग रास कियो श्री कन्हाई है ॥ आज ॥

॥ रास पंचाध्यायी का सार ॥

(५) रास लीला का पद

रास रच्यो छबि रासि रसीले दोउ छबीले पिय अरु प्यारी ।
दृग हुलास मद भरे नसीले हास हँसीले युगल बिहारी ॥
वेणुमें लैलै नाम पुकारचो अति व्याकुल भयो प्राणबिचारो ।
बेसुध होय चलीं जहां प्यारो मतवारी सब गोप कुमारी ॥
धन वृन्दावन परम सुहावन तीन लोक पावन मन भावन ।
तहां सुहाई सकल सखी गण हँसन चलन चितवन न्यारी २ ॥
कहीं श्याम अभिराम बाम तुम कौन काम धाई बन माही ।
यामिनि मैं बिश्राम समैया पति सेवै सोही धन नारी ॥
सुन कठोर चित चोरकी बानी अति घबरानी भई हैरानी ।
बोली एक सयानी प्यारे क्यों ठानी निठुराई बिहारी ॥
आप बुलाई तब हम आई निजकी प्रतिज्ञा क्यों बिसराई ।
जगके पति तुम कुंवर कन्हाई सांची पति सेवा हम धारी ॥
सुन दृढ बचन प्रेमके पागे हरि दुख भंजन मन अनुरागे ।

रस बस गावन नाचन लागे जिम शिशु निज प्रतिबिम्ब निहारी ॥
दरस परस रस लेत परस्पर नृत्य करत ताता थेई गत भर ।
देख गरब गोपिन उर गिरधर गुप्त भये सँग ले निज प्यारी ॥
भरी प्रेम मद जबहि किशोरी, वाहूकी संगत हरि छोरी ।
सकल सुंदरी हेरत बन बन, खोजैं कित प्यारे बनवारी ॥
विनय करैं कबहूं मिल रोदन कहैं पुकार पुकार वियोगन ।
कृपा करो प्रभु तृभुवन वन्दन हाहा नाथ दीन हित कारी ॥
अतिआतुर लख गोपीजनको त्रासित भयो मन अतिहि मदनको
गह्यो चरण तब मद मर्दनको प्रगटे हरि सब भये सुखारी ॥
महा रास तब श्याम रचायो अति आनंद हिये सर साधो ।
अंक अंक भर रस बरसायो पूरण चंद्र छई उजयारी ॥
द्वय द्वय गोपी बिच बिच नटवर मंडल मध्य प्रिया संग गिरधर ।
मुरली धुन नूपुर रव मनहर नचत गोपिका दैदै तारी ॥
कोई मृदंग कोई सारंगी कोई बजावत गत मोहचंगी ।
तान लेत कोई नयन कुरंगी पान करत कोऊ छबि रस ठारी ॥
चंद्रभयो थिर मोद छयो चिर निरखत सोभा चकित रहे सुर ।
जमुना बहत रही भई इस्थिर चलत समीर धीर श्रम हारी ॥
शुक मुनि रास पंचअध्यायी बरणी सो रसिकन मन भाई ।
मथुरा प्रेम सहित है गाई युगल चरण पर पल पल वारी ॥१५॥

(६) ॥ तथा पद ॥

॥ जसोधा तेरोरी यह लाल मेरेघर नित्य आता है ॥ इसके वज़न पर ॥

रसीला रास रसलीला हरी हँस हँस दिखाता है ॥
हैं उसके बसमैं सब, खुद प्रेमियों के बसमैं आता है ॥ रसी०

दोहा—प्रेम राज्य मैं निज भवन, बृन्दावन सुख पुंज ।
गुंजैं रसिकन मन भ्रमर, तहांसो नित्य निकुंज ॥
वहां आनंद प्यारी संग बन्वारी मनाता है ॥ रसी० ॥ १ ॥
,,—छेओ राग अरु रागिनी, हाजिर हैं छत्तीस ।
रितु बहार बिहार सुख, संपत बिसवा बीस ॥
सिवा अनुराग सौदा दूसरा बिकने न पाता है ॥ रसी० ॥ २ ॥
,,—चित्त उमंग हुलास तैं, रास रंग नित गान ।
अष्ट सहेली संगलै, करैं प्रिया उत कान ॥
मधुर मुरलीके सुरमैं मीठी २ तान गाता है ॥ रसी० ॥ ३ ॥
,,—प्रीत युक्त संगीत धुन, मन मोहै तत काल ।
कोई करताल बजावती, कोई नाचै दे ताल ॥
दृगन ताता तता थेई ये गत तबला बजाता है ॥ रसी० ॥ ४ ॥
,,—उमड़ घुमड़ चहुं ओरतैं, मद माती ब्रज बाल ।
मंडल कर कर नाचती, बिच बिच राजै लाल ॥
अनेकन रूपतैं मोहन सखीजन कौ रिझाता है ॥ रसी० ॥ ५ ॥
,,—छुम छुम बाजैं पैंजनी, रुम झुम नूपुर पांय ।
छुमक छुमक ठुमक ठुमक धुनी, मुनि मन लेत लुभाय ॥
येअद्भुत प्रेमरस मथुरेश रसिकौं कौ चखाता है ॥ रसी० ॥ ६ ॥

(७) रासका पद दादरा ॥

बृन्दा बिपन मैं राधा रमण करते रास हैं ॥ घन मन मगन वो सुंदरियां आस पास हैं ॥ बृन्दा० ॥ आनंद कंद प्रेमके फंदे मैं फंस रहे । सुन सुन के मंद भक्ति विमुख जन उदा

स हैं ॥ बृन्दा० ॥ १ ॥ प्यारे की है मुक्ट की लटक वैसी सोहनी । चितवन है मनकी मोहनीं क्या भ्रूविलास हैं ॥ बृन्दा० ॥ २ ॥ प्यारी की है वो चन्द्रिका दिल की लुभावनी । मन भावनी वो छबहै अधिक प्यारे हास हैं ॥ बृन्दा० ॥ ॥ ३ ॥ नटवर का पीतपट है सजीला बहार दार । प्यारी के अंग सारे रंगीले लिबास हैं ॥ बृन्दा० ॥ ४ ॥ क्या ताल सुरके साथ मैं वो नृत्य गान है । हरतान मैं अदा के मज़े ख़ास ख़ास हैं ॥ बृन्दा० ॥ ५ ॥ चेहरों पैं पसीना है परिश्रम से नृत्य के । रविचंद्र रस अमीसे भरे बिच अकास हैं ॥ बृन्दा० ॥ ६ ॥ श्रीव्यास पुत्र साथ हैं धारे सखीका रूप । कहिं सूरदास नंददास चर्णदास हैं ॥ बृन्दा० ॥ ७ ॥ मथुराने झांकी रास की पाई जो ध्यान मैं । वढने लगी है आस हिये मैं हुलास है ॥ बृन्दा० ॥ ८ ॥ ॥ ॥

(८) तथा पद ॥

(देवरिया पारलगाय नदिया चढिआई ॥ इस चाल मैं)

मोय रसिया रास दिखाय बौरी कर डारी ॥ मोय० ॥ बृन्दा विपन सघन कुंजन मैं । अरी मोहनवा बंसी दई बजाय ॥ बौरीकर० ॥ १ ॥ सुनत सिधारी राधा प्यारी । अरी खिलारी सखियां लईं बुलाय ॥ बौरीकर० ॥ २ ॥ हिल मिल रास रंग सर सायो । अरी लुभायो मनहर लियो रिझाय ॥ बौरीकर० ॥ ३ ॥ मधुर मधुर कहु तान सुनाई । अरी नचाई

बनिता सुंदर काय ॥ बौरीकर० ॥ ४ ॥ अस रस लीला मैं लख पाई । अरी कन्हाई सटक्यो चितहि चुराय ॥ बौरीकर० ॥ ५ ॥ खोजत वाकों बन २ डोलौं । अरी न बोलूं कछू न मोय सुहाय ॥ बौरीकर० ॥ ६ ॥ जित तित सखियां फिरें दिवानी । अरी गुमानी कित गयो देहु बताय ॥ बौरीकर० ॥ ७ ॥ श्रीमथुरेश प्रेम परखैया । अरी बलैयां लेउंगी पर २ पांय ॥ बौरीकर० ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥

---

(६) इस नाटक की चाल में ॥

(बन बन राजैं श्रीब्रजराज नये नये साज सजे)

गिरधर नाचें सखिन के संग नटवर रूप धरे ॥ बांकी अदा दिखाय , चितवन में चित्त चुराय , बंसी मधुर बजाय , फंदे मैं ले फंसाय ॥ यमुना तीर , बटकी छैयां , कर गल बैयां , नाचत सैयां बलकोबीर ॥ लटक दिखा के , नाच के गाके , सबहि रिझाके होतअहीर ॥ अभि राम , छबि धाम , घनश्याम , वोही पीर हरे ॥ १ ॥ वृन्दा विपन मैं रास , वो नित्य रस विलास , करैं रूप छबि निवास , ब्रज गोपिका हैं पास , प्रेम जंजीर , सब कौ बांधै , हित कौ साधै , प्रेम पंथ मैं धीर गंभीर , सुंदर , नटवर , मनहर , सुखकर , दिलबर गिरधर श्याम शरीर ॥ सिर ताज , ब्रज राज , पूरै काज , मथुरा पांवपरै ॥ गिरधर० ॥

॥ तथा पद ॥

(च्यौ श्रीवृन्दवन रास गोविन्द ॥ इस के वज़न पर)

रच्यो श्री बिहारी जूने प्यारी संग रास ॥
सारी व्रज नारी हिये उमंग हुलास ॥ रच्यो० ॥
१ सारंगी मृदंग वीना गोपिका प्रवीन ॥
बांसुरी नवीन सोहै सुभग विलास ॥ रच्यो० ॥
२ तारी देदे नाचै कान्ह गावै मीठी तान ॥
इत मुसिकान मोहै उत उपहास ॥ रच्यो० ॥
३ दोय दोय गोपी विच सोहै गोपीनाथ ॥
हाथ मांहि हाथ लिये साहित विकास ॥ रच्यो० ॥
४ सीतल समीर धीर कालिन्दी की तीर ॥
रजनी की पीर हरै शशि को प्रकास ॥ रच्यो० ॥
५ नारी भेस धारी सोहै शंभु तृपुरार ॥
जावै बलि हारी लख मधुरा खवास ॥ रच्यो० ॥

(११) नाटक की चाल ॥

(पल पल तन मन धन वारों री ॥ इस वज़न पर)

रस भरि अस धरि घन मानौ री ॥
वंसीवारो जग उजि यारो ॥ कानन में ताननसे रस बरसाय
रह्यो गोपिन प्रीत लुभानोरी ॥ रस भरि०

नन्दके नन्दन संग सखियां उमंग भरी। नाचत मन हरषानोरी॥ रस भरि अस घरि धन मानोरी॥
राधेरानी सबमैं स्यानी पियाको रिझायरही। मंद हास, प्रेम फांस डारिप्यारि, बसमैं मुरारि कियो मथुरा सुखारि हियो गावत प्रेम तरानोरी॥ रसभरि० ॥

---

(१२) रास लीला के सिद्धान्त का पद
॥ नाटक की चाल ॥

(नैनोंने तेरे कटारी मारी जिय कारी ॥ इस के वज़न पर)

ठानी गुमानी अनंग से जंग बिहारी ॥
उसे मात दिया, भारी घात किया, रति नाथ हिया, पछतात जिया, घबरात बात जात ॥ ठानी गुमानी अनंग० ॥
कही श्याम से आय के कामदेव, सुरनर नहि पायो तुमरो भेव, मोहि जीते बिना कस सुजस लेव, कही कान, धर ध्यान, रण ठान, नादान, बनी काम की फ़ौज हज़ारौं नारी ॥ ठानी गुमानी अनंग से० ॥
बन मैं हरीने आ. बंसी बिगुल दिया, सेना को साथला हाज़िर मदन हुवा, निरखत काम, तीखे नैना बान चलावैं मन हर सुंदर सारी बाम, रास रंग मैं सबहि रिझाया आप न आये बस में श्याम, काम लजाया मन शरमाया सारे शस्तर भये निकाम, कदम गहे मधुरेश के उसदम गया धामजपता हरि नाम, बनि काम की फ़ौज० ॥

---

(१३) राग हमीर का ज़िला

निरतत ढंग है (इसके बज़न पर)

पुलकित अंग है

प्रिया बदन चंद्र चकोर प्रीतम नैना नटखट तजत भ्रमना, रूप रस के पान करन मैं मानौ चंचल भृंग ॥ पुलकित अंग है ॥ १ ॥

मुसकात मंद लुभावै भामिनि, प्यारे को मन हरत कामिनि, श्याम सुंदर अंग निरखे श्यामा उरमैं उमंग ॥ पुलकित अंग है ॥ २ ॥

करै नृत्य स्वामिनि, लजत दामिनि, मेघ द्युति घन श्याम दरसैं, दोउ हिल मिल नचत हरषैं, मधुर बजत मृदंग ॥ पुलकित अंग है ॥ ३ ॥

लजै सूर श्याम प्रभा विलोकत चंद्र प्रिया मुख लखत सकुचत रास रंग अनूप सरसत मधुरा लोचन ढंग ॥ पुलकित अंग है ॥ ४ ॥

---

(१४) ॥ तथा पद ॥

(रच्यौ श्रीवृन्दावन रास गोविन्द ॥ इस के बज़न पर)

नाचैं श्री बिहारी प्यारे श्यामाजूके संग ।
सखिन हिये मैं धारी भारी है उमंग ॥ नाचैं० ॥
सारंगी बजावै कोउ नार है सितार ।
कोऊ इकतारो कोई खंजरी मृदंग ॥ नाचैं० ॥

कोई गोपी देवैं ताल कोई नाचैं बाल ।
चालमैं बजावै मीठी कोई मोहचंग ॥ नाचैं० ॥
बांसुरी बजावै कान्ह मोहै वाकी तान ।
लख मुसकान उठै कामकी तरंग ॥ नाचैं० ॥
भाव को बताके गाके प्यारी को रिझाय ।
नाना गत नाचैं प्यारे राचे रस रंग ॥ नाचैं० ॥
युगलकी शोभा लखि लोभी मन दंग ।
मथुरा छबी पै वारे कोटिन अनंग ॥ नाचैं० ॥

॥ राग चौताला ॥

॥ परम रसिक महानुभाव डिप्टी राजालालजी रचित ॥

रास में राधिकालाल नटवर बनी, धार पिया भेष शुभ केश कवरी। खुले ललित नव पीतपट मुकट कटि काछनी ॥ १ ॥
कियो अंगराग अनुराग मृगसार को बजत सुख पूर नव मुलिका की धुनी ॥
नचत दोऊ रसिकवर जोर मंडल सुघर लेत गत सप्त स्वर लजत जग के गुनी ॥ २ ॥
बजत मंजीर मृदंग ढप चंग जुत क्वणित नूपुर बलय चूरी ओर किंकणी ॥ जुगल भय कृष्ण यह प्रश्न जुवती करें कौन यामें सखी कुंज भूषण मणी ॥ ३ ॥
बाढ्यो रस हास सुख रास में सुन सखी जान नासकत को

स्वामी को स्वामिनी ॥ थकित भयो चंद्र लख रहस आनंद को चकित भईं बृजबधू प्रेम के रँग सनी ॥ ४ ॥
तता थेइ तता थेइ शब्द सब उच्चरे गान ओर तान में सकल चूढामनी ॥ उमड्यो आनंद को सिंधु अलि तासमें दासी भई प्रेम बस बाढी उत जामनी ॥ ५ ॥

(चौताला)

आज मोहन बने भामिनी रास में ॥ स्वामिनी राधिका लाल नटवर बनी लखत छबि जुवती भईं मगन रस हासमें ॥ १ ॥
जोर मंडल नचत बजत नव मुर्लिका ऊंचे सुर लेत सखी अधिक हुल्लास में ॥
श्रमित दोऊ जान सुख मान बिजना करत दासी मन मुदित सखी ठाडी अति पास में ॥ २ ॥

१ ॥ राग बसन्त ॥

आई बसन्त कंथ मन मोहन अन्तहि मौज उड़ावैं ॥
हम विरहन योगिन बन बन बन पिय पिय टेर लगावैं ॥
नहि सोहत केसू फूले ॥ नदनन्दन हमकों भूले ॥
मंजरी आम्र तरू छाई ॥ गरबीली अति इतराई ॥
बनवारी बिन सखि फुलवारी लखत हियो मुरझावै ॥ आई० ॥
हम पीतमके रस पागी ॥ भटकत बन मांहि अभागी
बन डोलत नारि नवेली ॥ मदभरी निपट अलबेली ॥
देख अकेली मदन बली हू अबला देह जरावै ॥ आई० ॥
नदियन तट बाग बहारी ॥ बिन मन मोहन नहि प्यारी
अति रूखी कोयल बानी ॥ यह पवन करतहैरानी
सन्त कोई मथुरेशको जाके खबर बसन्त सुनावै ॥ आई० ॥

---

(२) ॥ राग बसन्त बहार ॥

मोरे जियमैं बसन्तकी भई उमंग ।
निरखे मन मोहन प्यारी संग ।
युगल बसन्ति बसन तन धारैं ।
सुमन लसत हैं दोउ के अंग ॥ मोरे० ॥ १ ॥
हार सिंगार केसू बन फूले ।
लख के मदन की उठै तरंग ॥ मोरे० ॥ २ ।
पिया प्यारी बिहरैं उपबनमें ।

दर्शन तैं दुख होय भंग ॥ मोरे० ॥ ३ ॥
चंपा चमेली गुलाब फूलन को ।
बान लिये कर डोलै अनंग ॥ मोरे० ॥ ४ ॥
खेलैं फाग बसन्त में दंपत ।
काम बली से ठनी जंग ॥ मोरे० ॥ ५ ॥
श्री मथुरेश राधिका गोरी ।
भीज रहे दोऊ प्रेम रंग ॥ मोरे० ॥ ६ ॥

---

(३) राग बसन्त

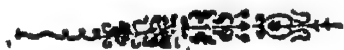
विपिन विहार बिहारी विहारन करत हरष अधिकाई ॥
तान बसन्त बान रति पतिने मुनिन समाध डिगाई ॥
नाना वरण सुमन बन फूले सोभा बरणी न जाई ॥
केसू हार सिंगार कुसुम सब रहे तरुन पै छाई ॥ वि०
बेला बेल चमेली आदिक लता तरुन लपटाई ॥
सुरभि सुगंध सरस मन भावनि मदन लुभावन आई ॥ वि०
पीतम अंग बसन्ती जामा पाग बसन्ती सुहाई ॥
चपला विपुल प्रकास रहै जिम घन मंडल मैं छाई ॥ वि०
प्यारी अंग बसन्ती सारी लखि रति अतिहि लजाई ॥
कुसुम शृंगार युगल तन उपमा का से बरणी जाई ॥ वि०
वनी ठनी मृगलोचनि सखियां झुंड झुंड चल आई ॥
राग वसन्त उचारैं हिल मिल बाजे विविध बजाई ॥ वि०
उमंग भरे मथुरेश लाडिली संग रमैं सुख दाई ॥

विरलो कोऊ धन्य रसिक जन निरखत छबि बल जाई। वि०



(४) राग बसन्त बहार

रितु राज बसन्त को सुख समाज ॥
लख चाकित युगल मन मुदित आज ॥
१ बन बन छबि हरष निहारैं ॥
तन धारे दोऊ रुचिर साज़ ॥ रितु० ॥
२ गोपी दल कर मंडल नाचैं ॥
युगल मध्य मैं रहे विराज ॥ रितु० ॥ ॥
३ गावैं राग बसन्त मनावैं ॥ ॥ ॥
काम के बसतजदई है लाज़ ॥ रितु० ॥
४ जा सुख कौ सुर गण ललचावैं ॥ ॥
ब्रज युवतिन सो सुलभ आज ॥ रितु० ॥
५ श्रीमथुरेश प्रेमके रसिया ॥ ॥ ॥ ॥
क्रीडत हैं रसिकन के काज ॥ रितु० ॥ ॥



* होली लीला प्रारंभ *

धमाल सारंग

नन्दके मेरी आज भिजोई सारी । नन्दके०— ॥
पनघट पै मोहि देख अकेली (होरी आली) होरी होरी
कहि मारी पिचकारी ॥ नन्दके० ॥ १ ॥
लै गुलाल मेरे अङ्गमें मल्योरी („) अँखियां मूंद
वजाई तारी । नन्दके० ॥ २ ॥
चोली मसक मरोर डारी वैयां („) अंग लिपट
वोल्यो वलिहारी । नन्दके० ॥ ३ ॥
मैं भोरी कछु हू नहि जानूं („) छली आज वा
मुकुट धारी ॥ नन्दके० ॥ ४ ॥
मथुरा मैं जाऊं कंस राजा पै („) चलौ संग
सव व्रज नारी ॥ नन्दके० ॥ ५ ॥



होली काफी

मोहन अजव खिलारी । देख होरी कौतुक भारी ॥
माया मोह जाल के माहीं सृष्ट फंसा कर सारी
दिखलावत नित नये तमाशे चतुरन वहुत विचारी,
बुद्धि सवकी पचहारी ॥ १ ॥ मोहन० ॥
जाको दरस कठिन योगिनकौ जपत जाहि त्रिपुरारी
नरतन धर सोई नटनागर सुन्दर श्रीगिरधारी,
नन्द सुत कुंज बिहारी ॥ २ ॥

 १५७१०

मन मटकी भर प्रेम रंगसे सुरताकी पिचकारी । तक तक मारिये श्याम सुन्दर तन चूक न औसर प्यारी, कपटको घूंगट हटारी ॥ ३ ॥
ज्ञान गुलाल अवीर भक्तिको याके बदन लगारी। गाढे गहु मथुरेश चरणको आवागमन मिटारी, बोलजै कृष्ण मुरारी ॥ मोहन० ॥ ४ ॥

॥ होली राग जंगला ॥

बंसीवारेके चरण मन रह्योहै अटक, मोपै जादूसो पटक कित गयोरी सटक ॥ बंसीवारेके चरण० ॥ १ ॥
छाती धरकत पल कलना परतहै ॥ जबसै निहारी वाकी झांकी की लटक ॥ बंसीवारेके चरण० ॥ २ ॥
होरीमैं प्यारो अतिही मतवारो ॥ रीझैं लख सारी याकी चटक मटक ॥ बंसीवारेके चरण० ॥ ३ ॥
फाग खेलन वासुं मथुरा मैं जैहौं ॥ तबही मिटैगी मेरी जियकी भटक ॥ बंसीवारेके चरण० ॥ ४ ॥

॥ काफी ॥

श्याम की सुनलो चतुराई ॥ रीमाई ॥
ये धूरत निज सुरत दिखाकर छीनत जनम कमाई । फेर जगतको सुखना दिखावत छुटैं मात पितु भाई ॥ भरीयामैं अति निठुराई ॥ श्याम० ॥

याके गुण सुन होत बावरे जगमैं होत हँसाई । वैरकिये यातैं स्वर्ग मिलतहै कंस सुगति जिम पाई ॥ लाज याको नैक न आई ॥ श्याम० ॥

गोपिन कों सहवास छांडके मथुरामें दासीरिझाई। तिसहूको मन चोरके भाज्यो द्वारा पुरी वसाई ॥ कहो यामें कौन भलाई ॥ श्याम० ॥



॥ होली ॥

(वरवा अथवा ॥ उजाममें गानेकी)

होरी खेल गोरी नंद नदनसे वोही जन मन
दुख भंजन हारो ॥ हो०
फिर पछितैहे औसर चूके जोवन धनको
कहा पतियारो ॥ होरी० ॥ १ ॥
काम क्रोध छल लोभ मोह मल धोकर
निरमलता उर धारौ । नेहको अंजन नैन
लगाये दीखत नटवर नंद दुलारो ॥ होरी० ॥ २ ॥
शुद्धभाव के कलसे मांहीं प्रीत रंगभर यापर डारो
कुंकुम विनय गुलाल उमंगको अंग
लपेट अंकगहि प्यारो ॥ होरी० ॥ ३ ॥
सुन्दर पद वाके पकर न छांडो शरणागति के
बचन उचारो । ऐसी होरी खेल जुगतिसे
तव मथुरेश टरे नहीं टारो ॥ होरी० ॥ ४ ॥



॥ होली काफी ॥

(श्रीपिताजी रचित)

मेरे जिन मारो कुंकुम लगजायगी ॥ वोतो गोलीसी हिये मेरे चुबजायगी ॥ अंग भिजोओ न रंगसे मेरो ॥ मेरी चंदासी सूरत बदल जायगी ॥ मेरे जिन०— ॥ १ ॥ ॥ ॥
अंचरा पर जो गुलाल डारिहौ ॥ मेरी तुम्हारी बिगर जायगी ॥ मेरे जिन०— ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥
भोलानाथ मोपै हाथन पटको ॥ मेरी मोतीसी आब उतर जायगी ॥ मेरे जिन०— ॥ ३ ॥ ॥ ॥



तथा काफी

जिन मारो पिचकारी। श्याम तेरी किन मत मारी ॥ जिन० ॥
लाख रूपैया की चूनर मेरी अंगिया देख हजारी। लहिंगा रेशम जरी तारको भीजो देख महितारी ॥ करे कैसी मेरी ख्वारी ॥ जिन०— ॥ १ ॥
धेनु चरावत बन बन डोलत ओढे कामर कारी। नाजुक हाथन कहा दिखावत हमकोंरे पिचकारी ॥ होड़ कहा मेरी तिहारी ॥ जिन०— ॥ २
होरी खेलौ वासैं रे मोहन जो सर होय तुम्हारी। जो मारी पिचकारी मेरे अनही देवोंगी मैंगारी ॥ कान तुम निपट अनारी ॥ जिन०— ॥ ३ ॥
तुम कहा मोकौं एमीजानौ जैसी और ब्रजनारी। भोला-नाथ रस बस भये मोहन कहनलगे सुन प्यारी ॥ आज कही मान हमारी ॥ जिन०— ॥ ४ ॥

तथा

॥ होली भोपाली रागमें ।

होरी कुंजन छाय रही ॥ लपक झपक खेलै राधेश्याम ॥ हो०
इत राधा उत कुंवर कन्हाई, मदमत वारे दोऊ कामिनिकाम ॥
सननन,नन इतबरसै केसर रंग, टननन कुंकुम वखेरतश्याम ॥
अबीर गुलालन बादर छाये, रंगरहे सब ब्रजके गाम ॥ ल० ॥
उत पिचकारिन इतहि कमोरिन, रंगभरदे भोलानाथ गुलाम ॥ लपक०— ॥



॥ होली ॥

(तेरो रसिया मदन मोहन गोहन लाग्यो डोलैरी)
॥ इसके वज़नपर ॥

मोहि पनिया भरत लंपट कपटि श्याम घेरोरी ॥ मोहि० ॥
घूंघट के पट झपट खोले ग्वालहिं टेरोरी ॥ मोहि० ॥
लेके गुलाल अंग मल्योरी रंगहु गेरोरी ॥ मोहि० २
रार ठनी वा मथुरेशसे कीजै निबेरोरी ॥ मोहि० ॥



॥ होली ॥

(शंकर धूम मचाई ॥ इसके वजन पर

मोहन सैन चलाई । अरी एरी आज मोहन० ॥
मोरे मन मारगयो वो कटारी मैं सुरत बिसारी लखइ-

नराई ॥ आज० मो० ॥
फागखेलन वासे कैसे में जाऊं वन, मनकी उरझन भारी है मोरी प्यारी । देहको नहि नेह, मोको निपट बौरी बनाई ॥ आज० ॥
केसर रंग मटकियन भर भर कर पकर पिचकारी गही है सारी । प्रेमरज मथुरेश बांधे मोको ये फाग सुहाई ॥ आज०— ॥

॥ होली ॥

(डगरमों री छांडो श्याम भिचजाओगे नैननमें ॥ इसके वजनपर)

नकर मोसे जोरी कान भोरी हौं होरी खेलन में ॥
कैसे सहूं पिचकारी तिहारी, काचो तन मेरो झेलन में ॥
डूबेगी तेरी सब ठकुराई मोरी सासु के हेलन में ॥
सारी भिजो मथुरेश नसारी मैं तो लाजूंगी गैलन में ॥

॥ होली राग सिंदूरा ॥

लाजत जौरी दिनचार नारनव जसुमत द्वार गमन कीजैहो ॥
१— फागको मिस है पायो जतन बिन चूकौ न अबकी वार ॥ नार नव० ॥
२— रंग गुलाल अबीर अरगजा सामग्री सवत्यार ॥ नार० ॥
३— ढफ मोचंग रवाव सारंगी हाथन लिये सितार ॥ नार० ॥
४— गोकुल चलीप्रेम मतवारी निरखन नंदकुमार ॥ नार० ॥
५— तक तक मारत हरि पिचकारी गोपीगावत गार ॥ नार० ॥
६— लपकगहे सब कुंवरकन्हाई मेटीमनकी खुमार ॥ नार० ॥

७—गोपिनकी मथुरेश मैं प्रीती निरख लजी सुरनार ॥ ना०॥



॥ होली सोरठ में ॥

(अथवा झंझोटी में)

होरी में बंसीवारो उतपात करै ॥ होरी में० ॥
हाथ लकुट लिये गलि गलि भटकत पनघट जायअरै ॥ हो०॥
गागर फोर मरोरत बैयां हंस हंस अंकभरै ॥ अंग रंगसे
सारी भिज वै टारो नाहि टरै ॥ १ ॥ होरी में० ॥
लपक गुलाल अबीर मेरे मुख मल्यो सास झगरै ॥
या मथुरेशसे पूरो बदलो लीये बिन नाहि सरै॥ २ ॥ होरीमें० ॥



{ इसी होलीको झंझोटीमें गानाहोयतो अंतरेमें (री) शब्द लगाकर
गावो यानी उतपातकरै री अरैरी वगैरावगैरा ॥ ॥ }

॥ होली ॥

॥ होरी आज जरौ चाहे कालजरोरी मन मोहन मोसे आन मिलौरी ॥
॥ इसके वजन पर ॥

मोरी लाज नसौ चाहे लोग हंसौरी मैंतौ नंदकी पौरी
जाय परूंगी ॥ मो० ॥
मन मोहन बिन कल न परत है छिन पल धीरज
नाहि धरूंगी ॥ मो० ॥

जब पिया फाग खेलवे निकसैं मैंहूं रंग पिचकारी धाय भरूंगी ॥ मो० ॥

औसर पाय झपट लंपटपर मन माने निज वार करूंगी ॥ मो० ॥

सखियन संग गुलाल वदनपर मीडत नैंकहु नाहिं डरूंगी ॥ मो० ॥

गहकर कर मथुरेशको गाढो बचन लिये विन नांहि टरूंगी ॥ मो० ॥

॥ होली ॥

प्रेम रंग बिन फागहि फीको ॥
होरी होरी पुकारत बौरी भांडो लख निज जीको ॥
कपट कींच यामैं निपट भरीरी लेश न कृष्ण रती को ॥
नीरयामैं भरचो वदी को ॥ प्रेम०— ॥ १ ॥
विरह तप्त अंसुअनसे धोले पुनि पुनि मन मटकी को ॥
शुद्ध भावकी केसर घोरिये निर्मलजल भक्ती को ॥
रंग यह सब से नीको ॥ प्रेम०— ॥ २ ॥
भर अभिलाष गुलालसे झोरी यही साज होरी को ॥
लेकर फाग खेल मोहन से करगह प्राण पती को ॥
संग रखिये सुमती को ॥ प्रेम०— ॥ ३ ॥
ढफ अनुराग मृदंग भजनको बाजो नवल रुची को ॥
ध्यान सहित गुणगान निरन्तर प्यारी भानुलली को ॥

होय वस सुत नंदजी को ॥ प्रेम०— ॥ ४ ॥
प्रभुताई चतुराई तज प्रभु चेरोहोय चेरी को ॥
श्रीमथुरेश प्रेमको रसिया वोही सार श्रुती को ॥
आसरो सोहि वाहीको ॥ प्रेम०— ॥ ५ ॥

॥ होली ॥

॥ मैंतो उनीकौ वचन दे हारी ॥ इसके वजन पर ॥

मोसे छेरकरी जमनापै श्याम ॥ मोरे हियेमैं खटक है भारी ॥
नीर भरत मेरी वैयां मरोरी ॥ हसदीनी कछु गारी ॥ मो० ॥
फाग खेलत वासे लेऊंगी वदलो ॥ छीनूंगी पिचकारी ॥ मो० ॥
मीड़ गुलालसे मुख मोहनको ॥ देह भिजोऊंगी सारी ॥ मो० ॥
वेंदी भाल नैन दे कजरा ॥ कर छोडूंगी नारी ॥ मो० ॥
फगुआ लियेबिन जानेन दूंगी ॥ ठसक निकासूंगी सारी ॥ मो ॥
मथुरा पति होरीको रसिया ॥ देखूं हैं कैसे खिलारी ॥ मो० ॥

॥ होली । रसियाकी चालमें ॥

मोय रसिया अधर उठाय ॥ हूंतो हारगई
होरी खेलन तो से आई अरे कन्हाई, अव वगयो नहि जाय ॥
सारी-सोकौ रंगमैं वोरी, अहो निगोरी काया सगरी दिखाय ॥
अंखियन मांहि गुलाल करकरहो , अरे तरकगई चुरियां कहा उपाय ॥

सासनिगोरी तल तल खैहै, अरेवो ननदलभोरीहू रिसखाय ॥
बेर बेर दे दे पिचकारी, अरे अनारी छातियां दईं दुखाय ॥
उतपाती ये सखा तिहारे, खडे निहारैं तारी दै दै जाय ॥
भाजगईं मोरि संग सहेली, रही अकेली थर थर कांपत पांय ॥
बेंदी कजरा मिटयो जानके बुरोमानके बलमा बहुत रिसाय ॥
फगुधादैमोय घरपहुंचाओ, अजीबताओ मारग मोसंगधाय ॥
मधुराकहै रसिकसुनलीजै, बिलम नकीजै हियोमे रोअकुलाय ॥

होली जयपुर की भाषा में ।

॥ मोरे हियेमें बसैछे प्यारो सांवरोए ॥ इसके वजन पर ॥

होरी खेलवा को म्हाने भारी चावरी ए ॥
आसीसगरी ब्रजकीनार । ज्यांमें राधाजी सिरदार ॥
दूजो सांवरियो खिलार । दर्शन पावरी ए ॥ १ ॥
मटक्यां भर भर केसर रंग । भेस्यां ऊंको सारोअंग ॥
ऊठै काम की तरंग । होरी गावरी ए ॥ २ ॥
लासी लाल गुलाल अबीर । प्यारो दाऊजीरो वीर ॥
चालौ जमुनाकी तीर । गोरी सांवरी ए ॥ ३ ॥
घूमर दे दे करस्यां नांच । गास्यां सारंग राग खमाच ॥
रही धूम छै माच । चाल उतावरी ए ॥ ४ ॥
नेरे आपहुंच्योरी कान्ह । सुनले बांसुरी की तान ॥
गोप्यां कररही छै गान । बेगी आवरी ए ॥ ५ ॥
आई सखियांकी छे भीर । उड़वा लाग्यो छे अबीर ॥
बरसै रंगको नीर । भरगई बावरी ए ॥ ६ ॥

दोन्यो कांनी रंग बौछार ॥ होबालागी री बहार ॥
देवे पिचकार्यांरी मार । उपजै भावरी ए ॥ ७ ॥
लीनी पिचकारी छे छीन । मोहन कीनो छे आधीन ॥
गोप्यां प्रेम प्रवीन । खेल्यो दावरी ए ॥ ८ ॥
राधा प्यारी सूं चित चोर । बोल्यो रसिया नंद किशोर ॥
हा हा खात हूं तोर । बेग छुडावरी ए ॥ ९ ॥
प्यारी झांकी ललिता और । ऊंके भारी जोवन जोर ॥
बोली मुखड़ाने मोर । पिये नचावरी ए ॥ १० ॥
मथुरा भारी आनद मान । गाई होरीकी छे तान ॥
दम्पत चरणांको ध्यान । चित लावरी ए ॥ ११ ॥

॥ होली ॥

॥ व्रजमंडल देस दिखादेरासिया ॥ इसके वजन पर ॥

वरसाने मची रंगीलीहोरी ॥ वरसाने ॥
महलनमैं सखियन संगधजसे । सजबैठी राधागोरी ॥ व० ॥ १ ॥
ढफ ढोलक सारंगी बाजैं । नचैं सखी गावैं होरी ॥ व० ॥ २ ॥
रंगनके वहुमाट भरेहैं । मनन गुलाल मननरोरी ॥ व० ॥ ३ ॥
धायेसखा संगले मोहन । धूम मचाई चहुंओरी ॥ व० ॥ ४ ॥
खेलैंफाग सखासखियनतैं । होनलगी उतचितचोरी ॥ व० ॥ ५ ॥
हरिपिचकारी प्रिया तनमारी । प्रियारंग मटकीढोरी ॥ व० ॥ ६ ॥
लालगुलाल लालमुखमलके । ललिता हँसीनवलगोरी ॥ व० ७
श्रीदामाकौ पकरि बिसाखा । पहिराई पायलजोरी ॥ व० ॥ ८ ॥
दै दै ताल नचावनलागी । अबीर उड़ावत भरझोरी ॥ व० ॥ ९ ॥

चंद्रावली की दौड़ मनसुखा । तनी कंचुकी की तोरी ॥त्र०॥१०॥
अस नाना विध रस बरसावैं। मथुरा निरखै करजोरी ॥त्र०॥११॥

होली

॥ सुनआईरी आज मैंतो होरीकी भनक ॥ इसके वजन पर ॥

सुनमाईरी कन्हाई तेरो अतिहि निडर । सुन ॥
मोसे कीनो छेर लीनी घेर डगर ॥ सुन० ॥
उलटजातरही में पनघटसे । नटखट करदीनी
रंगसे तर ॥ मो०— ॥ १ ॥ ॥ ॥
घूंघटपटमेरो खोलके लंपट । तकनलग्यो मोहि
खोटिनजर ॥ मो०— ॥ २ ॥ ॥ ॥
हँसमुसकाय गुलाल लगायो । खटकरह्यो मोरी
अँखियोंमेंभर ॥ मो०— ॥ ३ ॥ ॥ ॥
होरीके मिस मोय बौरी बनाई । रहीमोको देहीकी
नाहि खबर ॥ मो०— ॥ ४ ॥ ॥ ॥
चितवन में वाके भारीहै टोना ! निरखतही ॥
सुधजातबिसर ॥ मो०— ॥ ५ ॥ ॥ ॥
मथुराकहै मैया वेग बतादे । कितहै छिप्यो
कान्हा ढीठ लँगर ॥ मो०— ॥ ६ ॥ ॥ ॥

॥ राग काफी होली ॥

प्रींतकान्हासै लागी हँसौ कोई लाख अभागी प्री०॥

१ अतही गन्दे जगके धन्धे तजैं परम वैरागी ॥
विचरैं जित तित प्रेमबावरे सदारहै लौलागी ॥
धन्य ऐसे अनुरागी ॥ प्रीत कान्हा० ॥ १ ॥
२ लोक वेद कुल कान नमानैं रहैं विषयाविषत्यागी ॥
हँसैकबहु कबहूअतिरोवैं विरह विथा जबजागी ॥
लखैंकोई विरलेसुभागी ॥ प्रीतकान्हा० ॥ २ ॥
३ होरीज्वाला उठै हिये मैं जरैविरह की आगी ॥
डार धूर लेंडी दुनियापै नेमकी कार उलांघी ॥
भई सुरता रसपागी ॥ प्रीत कान्हासै ॥ ३ ॥
४ चित्तभ्रमर नित हरिपद अम्बुज लै मकरंदपरागी ॥
मथुरामोदमगन निश्चलहै होयकृपा को भागी ॥
सोही हरिसे हममांगी ॥ प्रीतकान्हासै० ॥ ४ ॥

तथा

{ श्रीगोविन्द देवजीमैं रचनाकी झांकी और होलीकापद रागनी
{ वजाज अथवा वरवा याऔर कोई रागिनी मैं गायाजासकता है }

आज गोविन्द राधिका गोरी खेलत होरी राजभवनमें ॥
रचना रची सुंदरीसाखियन नाना रंगनतैं आंगनमें ॥ आ० ॥
ओढे प्रिया बसन्ती सारी चित्र बिचित्र रंग गुलकारी ॥
मोहन पीताम्बर तनधारी भारी रचनाहै अंगनमें ॥ आ० ॥
भरी गुलालअवीरन झोरी हँसहँस छिड़कै रंग किशोरी ॥
प्रियाकीसारी रंगमेंबोरी हरिने मल्यो गुलाल बदनमें ॥ आ० ॥

चलनलगी पिचकारी उमंगसे अंगभयोतर केसररंगसै ॥आ०॥
लाजकोझगरो मच्योअनंगसै चकितभये लखदेवगगनमैं॥आ०॥
फागुनमैं रचनाकीझांकी अतिहिमनोहर बांकीअदाकी ॥आ०॥
छबियह मनोहर नवलवनाकी बसीरहै मथुराके दृगनमैं ॥आ०॥

॥ होली ॥

॥ मूंगेकी चालमैं ॥

होरीखेलैंमन्मोहनराधाप्यारी। कुंजनभारीधूममचीअरे हां हां॥
१ झुंडझुंड धाईं ब्रज वनिता। सारी रसरंग रची अरे हां हां॥
२ पिचकारीमारत बनवारी। नहिंकोई नारीबची अरे हां हां॥
३ मलगुलाल मोहन मुख सखियां। दैदैतारी नची अरे हां हां॥
४ बाजतढपमोचंग खंजरी। ललची निरख शची अरे हां हां॥
५ जोरीरसिकप्रियाप्रीतमकी। मथुराजियमैं जची अरे हां हां॥

॥ होली ॥

रंगीली सजीलीरसीली गुइयां। आईरी होरीहोरी॥ रंगी०॥
नंदनदन अति ढीठलँगर वा। हौंअबला भोरीभोरी॥ रंगी०॥
जोबन माती रसरंगराती। सखियां खडीपौरीपौरी॥ रंगी०॥
जिततित रंगके माटभरे हैं। कुंकुंहै झोरी झोरी॥ रंगी०॥
घरघर मंगल गीतमनोहर। धूममची होरी होरी॥ रंगी०॥
खेलैंफाग मथुरेश राधिका। गोपीग्वाल जोरी जोरी॥ रंगी०॥

॥ होली ॥

॥ परदेसी सैंयां नैनालगाय दुख देगयो ॥
॥ इसके वज़न पर ॥

तोरे हा हा खाऊं, मोसे ना खेलौ होरी सांवरे ॥ तोरे० ॥
निपट अजान मैं भोरी बारी, नट खट आप खिलारी पुकारै सारो गांवरे ॥ तोरे० ॥
तकमारी मोरे उर पिचकारी, सारी काया दुखाय कँपाय मोरे पांवरे ॥ तोरे० ॥
होरीके मिस बरजोरी करतहौ, बैयां पकर झक झोरि कहां को यह न्यावरे ॥ तोरे० ॥
जिन छेडौ मथुरेश पिया मोय, होकर चतुर सुजान बनौजी मत बावरे ॥ तोरे० ॥



॥ होली ॥

॥ कोई मोहन पियासे मिलादोरे ॥ इसके वज़न पर ॥

नये होरीके रसिया विहारी री ॥
फागुनमें उनके गुनकी री महिमा अपार है ॥
बरजोरी चितकी चोरीमें बस होशियार है ॥
कुलवन्ती नारियोंका तौ जीना असार है ॥
देखो जिधर उधरही नई छेर छार है ॥
मोरी रंगसे भिजोई है सारी री ॥ नये० ॥
पनघट में मुझ कौ देख झपट कर पकड लिया ॥

घूंघट उलट गुलाल मेरे मुख पै मल दिया ॥
डरसे शरम सै लजरारी नाजुक मेरा हिया ॥
पिचकारी मारी सीनेपै मुस्काके चलदिया ॥
मथुरा जाऊं करूंगी मैं ख्वारी री ॥ नये होरीके० ॥

॥ होली ॥

॥ बलमैयाने मारी कटार इसके वज़न पर ॥

खेलैं श्यामा सांवरियासे फागमें सगरी भीजी वहां ॥
हुई निकुंजमें होरीकी सारी तैयारी ॥
सम्हल २ के खडीं सुंदरी वो ब्रज नारी ॥
कोई गुलाल लिये रंगकी कोई झारी ॥
बिराजी मध्यमें सरकार राधिका प्यारी ॥
मीठी गावैं वो होरी की राग ॥ मैं सगरी०— ॥
उधर सखौंको लिये सांवरे मुकट धारी ॥
बिराजे रंग भरी सोहै करमें पिचकारी ॥
हरेक नारिकी छातियों में ऐसी तक मारी ॥
कि तन बदनमें मदन की हुई चमत्कारी ॥
दीनी लज्जा हु सखियौंने त्याग ॥ मैं सगरी०— ॥
लपकके सखियोंने ग्वालोंके मुख गुलालमला ॥
नचाके छोडा हर इकको किसीका बस न चला ॥
पकड मेंआगये ललिता सखीके नंद लला ॥
छुटे वो फगुआ नज़र कर चली न कोई कला ॥

मथुरा भावै सखी धन्य भाग ॥ मैं सगरी ॥



॥ होली ॥

॥ श्यामा श्याम २ इसके वजन पर, नाटक की चाल ॥

खेलैंफाग खेलैंफाग, श्यामा महारानी संग सखी स्यानी बरसै रंग ॥ खेलैं०— ॥
नवीला रसीला नैन विशाल ॥ हँसीला छबीला नंदकालाल ॥ रंगकी झालन लाल गुलालन कुंकुम थालन ग्वालन संग ॥ हिये उमंग सोहने अंग बन ठन ॥ हो ॥ लपक झपक चटक मटक बांकी वो लटक, सुख वो कैसे कह्यो जाय ॥ खेलैं०— ॥ १ ॥
नारिनपै पिचकारिन मार, गिरधारी बनवारी देखैं बहार, श्रीमथुरेश की भानु नरेश सुतासे बिशेश ठनी रस जंग, लाजै अनंग, बाजै मृदंग द्रंग द्रंग ॥ हो ॥ गगन मगन राजै विमानन सुरगण शोभन, पुष्पन कौ वे रहे बरसाय ॥ ॥ खेलैं०— ॥



॥ होली ॥

॥ बलबीर निगह का तीर ॥ इसके वजनपर, नाटक की चाल ॥

मतडा लअबीर गुलाल नैनमें करकत अहो नदलाल नैनमें० ॥ कैसे घर अब जाऊं लजियाऊं सकुचाऊं । छेडकरत मोसे ग्वाल बाल ॥ मत डाल०— ॥

थर थराता है अरे खौफ़ से यह तन मेरा ॥
तर किया रंग से तुम ने नया दामन मेरा ॥
है ग़ज़ब सांवरे नोकीला यह जोबन तेरा ॥
पर नहीं चाल चलन ठीक है मोहन तेरा ॥
छेड मत कर नट खट हम से ॥
निलज बनिये न इक दम से ॥
विनती करत चरन परत मथुरा कहत ॥
कृपा चहत ॥ हो ओ०— ॥ ॥

॥ होली बिहाग मैं ॥

सारि भिजोओ न श्याम, सुंदर मोरि ॥ ॥
कौन भांत घरमें पग धरि हौं मैं कुलवन्ती बाम ॥ सुंदर० ॥
लोक लाज व्रज राज निभाये सरै जगत को काम ॥
नंद राय के कुंवर कहावत फिरत धरावत नाम ॥ सुंदर० ॥
चोली भीजी छातियां झलकैं दीखत सब तनचाम ॥
रंग टपकरह्यो अंग अंगसे कैसेजाऊं निजधाम ॥ सुंदर० ॥
वैयांमरोरत तन झकझोरत मथुरा पति अभिराम ॥
बांहगहेकी लाज तुम्हीं कौ चेरी भई बिनदाम ॥ सुंदर० ॥

॥ होली ॥

॥ छिपियाके असल गंवार ॥ इसके वज़न पर ॥

कान्हा मनके मोहनहार होरीमें तैंने व्रजकी
लुभाई सारी नागरियां ॥

१ रस भरे नैनबान पिचकारी, तकमारी चितचोर ॥ होरी०॥
२ प्रेमगुलाल प्रीतकी कुंकुम, बदन मलत मुखमोर ॥ हो०॥
३ नेहके रंग अंग तरकरके, सारी करी सराबोर ॥ हो०॥
४ आज लेन बदलो हम आई, देखन जोबन जोर ॥ हो०॥
५ फगुआ लियेबिना नहींमानैं, जातकहां हमैं छोर ॥ हो०॥
६ खेलौआज दिलखोलकेहमसे, खायो बहुत दधिचोर ॥ हो० ॥
७ नाच गाय हमैं सबहि रिझाओ, मथुरा कहै करजोर ॥ हो०॥

॥ होली ॥

{ गुइयां आज खेलैं होरी कन्हैया संग चालो
{ इस के वजन पर होली }

सैयां श्याम हौं लजाऊं । चुनरिया ना भिजो ओ ॥ सै०॥

१ पतरेसे पतरे पोतकी चूनर भीजे मन सकुचाऊं ॥
रंगसे तरभई पाटकी अंगिया अंगमें कैसे छिपाऊं ॥
॥ सैयां श्याम०— ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

२ झुंडके झुंड धाय रहीं सखियां अंखियां कैसे उठाऊं ॥
सांकरी खोर ठौर नहि दीखै छिपन कहां अबजाऊं ॥
॥ सैयां श्याम०— ॥ २ ॥

३ अंगसे अंग मिलाओन रसिया तुम्हरे हा हा खाऊं ॥
मथुराके स्वामी लाज रखोमेरी पैयां पकर मनाऊं ॥
॥ सैयां श्याम०— ॥ ३ ॥

॥ होली ॥

॥ तुम देखो लोगो भूल भुलैयां का तमाशा, इसके वज़न पर ॥

मनमोहन प्यारे छांड दो वैयां जी हमारी ॥ मन०॥
देखैं आली मद मतवाली नखरेवाली सारी ॥
रंग से भीजी सारी मेरी देख हंसै दे तारी ॥ मन०॥
होरी में वर जोरी कैसी मैं हूं बारी भोरी ॥
बरसाने की राज किशोरी संग सहेली मोरी ॥ मन०॥
नैनन माहिं गुलाल न डारो हा हा खाऊं तोरे ॥
छलवल भरे श्याम तुम निकसे दीखत वाहिर भोरे ।म०॥
विन्ती कर मैं सरवस हारी अब दूंगी मैं गारी ॥
मथुरा पति रसिया वनवारी प्रघटे नये खिलारी ॥ मन०॥

डिपटी राजालालजी रचित होली

वृखभान की लली । होरी खेलन कान्हा सों चली ॥ १ ॥
मिलगये मोहन कुंज गली । पकडे मिल दश पांच अली ॥२॥
छीनो पीतांबर और मुरली । पहराइ नथ चँपा कली ॥३॥
लाल चुनरिया हरी कंचली । कटिपर लंहगा साठ कली ॥४॥
वैंदी वेना ओर टिकली । चरण कमल नूपुर वजली ॥५॥
रोरी घोर कपोलन मली । केशर चोवा रंग रली ॥६॥
बाजत ढफ मृदंग खंजली । नाचत वृजकी गली गली ॥७॥
वृज जुवतिन की बेल फली । दासी कहत यह जोरी भली ॥८॥

तथा

कुंजनमें होरी आज मनी ।

देखोसखि राधा कैसी बनी । माथे मुकट सोहे कट कछनी ॥१॥
पीतांबर पट अति रमणी । रमणा बनी प्यारी रमणी ॥२॥
छुद्र घंट पायल बजनी । अंखियां काजर रेख अनी ॥३॥
चहुंदिश अलीगण चंद्र बदनी । संग राजैं श्रीनाथ धनी ॥४॥
झांझ मृदंग बजत ढफनी । मधुर मधुर बंसी की धुनी ॥५॥
कुंमकुम केशर रंग कनी । उडत गुलाल अबीर सनी ॥६॥
वृज जुवती सब बनी ठनी । कंचली चोवा रंग सनी ॥७॥
खेलत बसन्त बीती रजनी । छबी नृखत दासी सजनी ॥८॥

फागोत्सव की सवारी श्रीयुगल सरकार की
मदरामपुरे पाधरी उससमय की होली का पद

(१) रसियाकीचाल में होरी

श्यामा संग नंद कुमार । खेलन फाग चले ।। श्यामा संग

१ माधवेश गोपाल भक्त धन । धन जयनगर बजार ।। खेलन०
२ धन्य रसिक हरिजन को मंडल । जिनके बस सरकार ।। खे०
३ सज्यो विमान उमगसों सखियन । सोभा जासु अपार ।।खे०
४ युगल गात पोशाक बसन्ती । अनुपम है शृंगार ।। खेल० ।।
५ दम्पति छवि लख लजित मदन भयो रतीभई बलिहार ।।खे०
६ रूपमाधुरी वरणि न जावै । मोहे विध त्रिपुरार ।। खेलन० ।।
७ वधुन सहित सुर चढे विमानन । निरखैं तन मन वार ।। खे०
८ बरसावैं मिल पुष्प गगन सों । बोलैं जय जयकार ।। खेल० ।।
९ चली सवारी श्री दम्पति की । देखन बिपन बहार ।। खेल० ।।
१० झुंड झुंड पुर वासी उमडे । चकित सकल पुर नार ।। खेल० ।।
११ शारद वीन बजावत नारद । नाचैं लिये सितार ।। खेल० ।।
१२ गोप गोपिका संग सिधारैं । धर बहु बिध शृंगार ।। खेल० ।।
१३ ढप अरु झांझ बजैं बहु बाजे । गावैं सरस धमार ।। खेल० ।।
१४ उडत गुलाल लाल भये बादर । आनंद अपरम्पार ।। खे० ।।
१५ सखा सखी करैं केलि परस्पर । रीझैं युगल निहार ।। खेल ।।
१६ खेलत फाग सवारी निकसी । रस बरसावन हार ।। खेल० ।।
१७ श्रीमद रामपुरा में पहुंचे । धन्य युगल सरकार ।। खेल० ।।
१८ गढ गोपाल जहां अति सुंदर । कुंजकी अजब बहार ।। खेल० ।।
१९ फूलरहे तरुवर कुसुमन तैं । ऋतु बसन्त विस्तार ।। खेल० ।।

२० खेलन लागे फाग परस्पर । दम्पति प्राण अधार ॥ खेल०॥
२१ प्रिया गुलाल मलत मुख हरिके। रस वस भये मुरार॥ खे० ॥
२२ कुंकुम मली गुपाल प्रिया मुख । रंगन की बौछार॥ खे०॥
२३ श्री हरि भक्त विवश बहु लीला । करैं सरस वपुधार ॥ खे०॥
२४ श्री मथुरेश निकुंज भवनमें । विलसैं विविध विहार ॥ खे० ॥

॥ होली ॥

(नथहार। के रसिया विहारीरी, इसके वजन पर)

कान्ह चूनर भिजोओ न मोरी रे ॥ कान्ह ॥

१ हैं संग की सहेलियां पीछे से आरहीं । पनघट को देखौ नारी इधर से हैं जारहीं । वनमें अकेली छातियां मेरी कँपारहीं। सन्मुख सकूं न झांक हैं अंखियां लजा रहीं ॥ हाहा खाऊं न कीजै बराजोरी रे ॥ कान्हा ॥ १ ॥

२ पिचकारियों की मारसे घायल हुआ वदन । नादान भोगी वारी हूं नाजुक है मेरा तन । नाजानूं कैसे आपसे लागी मेरी लगन । पछता रही हूं तुमसे लगा वेसमझ ये मन ॥ प्यारे काहे मोरी वैयां मरोरी रे ॥ कान्हा ॥ २ ॥

३ चमकै गुलाल देखौ मेरे बाल बाल में । रेशमकी चोली डारी मसक इस कुचाल में । क्योंकर मैं घरको जाय सकूं ऐसे हालमें । पछताई फंसके आपकी उलफ़तके जालमें ॥ मथुरा मुझपै चलैना ठगोरीरे ॥ कान्ह ॥ ४ ॥

(डोल उत्सव का पद ॥ काफी)

राजत डोल युगल रंग भीने ॥

१ खेलत फाग भयो श्रम भारी नाना कौतुक कीने ॥
ताहि निवारन काज अली गण रुचिर ठाट रच दीने ॥
भये दम्पति श्रम हीने ॥ राजत०— ॥ ॥

२ धीमे धीमे दोला हालत पौन चलत झीने झीने ॥
सघन कुंज रस पुंज मनो हर छवि लख मन हरलीने ॥
युगल रस रास नवीने ॥ राजत०— ॥ ॥

३ अर्ध निमीलित दृग अति सोहैं दोउ गलबैयां दीने ॥
मधुरा या छवि पर वलिहारी जीवन दरस अधीने ॥
धन्य दोउ प्रेम प्रवीने ॥ राजत०— ॥ ॥

तथा (दादरा)

डोल विराजत मन हर जोरी ॥

१ रतन जटित नव डोल सुहायो कोमल रेशन वसन बिछ्यो री ॥ डो०— ॥ ॥ ॥ ॥

२ देखत ही जाके श्रम भाजै युगल विराज आनंद लह्यो री ॥ डो०— ॥ ॥ ॥ ॥

३ सीतल मंद पवन सुखदाई वन सुगंध सों महक रह्यो री ॥ डो०— ॥ ॥ ॥ ॥

४ गौरश्याम छवि धाम सुघर वर, रसिकन की

मन भावनि जो री ॥ डो०— ॥ ॥ ॥

५ सखियां लिये सामग्री सुख की, हाजिर मन रस रूप छक्यो री ॥ डो०— ॥ ॥ ॥ ॥

फाग परिश्रम मिट्यो युगलको मथुरा हिये रस नद उमड्यो री ॥ डो०— ॥ ॥ ॥ ॥



तथा

गज़ल राग सोहनी

१ देखौ श्यामा श्याम की छव आज क्या अन मोल है ॥
हैं युगल जिसमें विराजे धन्य धन वो डोल है ॥ देखौ० ॥

२ डार गलबैयां परस्पर बैठे हैं सुख प्यार से ॥
निकट दोनों के मनोहर सोहैं गोल कपोल हैं ॥ देखौ ॥

३ दोनों चेहरों पर दमक और कुंडलों की है झलक ॥
मानौ मिलके चन्द्र सूरज बैठे करने किलोल हैं ॥ देखौ० ॥

४ हौले हौले हिलके दोला देरहा है सुख अमोल ॥
उठ रही आनंद लहरें दिल का चैन अतोल है ॥ देखौ० ॥

५ सेवामें हाज़िर हैं सखियां सुख की सामग्री लिये ॥
अपसराऐं संग सुर बोलैं मुबारिक बोल हैं ॥ देखौ ॥

६ कुंज की हरियाली डाली डाली फूले हैं सुमन ॥
झांकी श्रीमथुरेश की करते रसिक दिल खोल हैं ॥ देखौ० ॥



तथा पद

(देखोरी ना मानै श्याम, इसके वज़न पर)

झूलैरी राधा गोपाल, ठाट देखभईं अँखियां चकित मोरी॥

१ झूलाकी झलक भारी मुखकी दमक न्यारी ॥
भानु शशी मानौ मिल कै करैं ख्याल ॥ झूलै०॥

२ कोई सखी दे झोटा तक तक नंदढोटा ॥
कोऊ तकत ठारी चित्रसी लिखी बाल ॥ झूलै० ॥

३ गावै कोई मद माती कोऊ ठारी इतराती ॥
प्यारी के हिये भाती बतियां करै लाल ॥ झूलै० ॥

४ यमुना नदी के कूले नवल युगल झूलैं ॥
मथुरा करत ध्यान काटे जगत जाल ॥ झूलै० ॥

(१) ॥ गणगोर पूजन के पद ॥

{ इटीश हट छांडो छबीला म्हानै पूजन दो गणगौर
इसके वज़न पर }

रंगीली राधा प्यारी छबीली श्यामा पूजरही छे गणगोर ॥
१ नये नये फूल गुलाब चमेली, केशर कुंकुम घोर ॥ रंगी० ॥
२ मांग सिंदूर भाल साजि बेंदी, चंदन की रचि खौर ॥ रंगी० ॥
३ धूपदीप नैवेद्य पानदे, अस्तुत करैं कर जोर ॥ रंगी० ॥
४ श्रीजगदम्ब दयालू अम्बे, वर देहु नंद किशोर ॥ रंगी० ॥
५ अष्ट सहेली रूप नवेली, बिनती करैं निहोर ॥ रंगी० ॥
६ परमानंद दसौं दिस छायो, रस बरसत चहुं ओर ॥ रंगी० ॥
७ दीनो वर चित चोर सांवरो, परम मुदितमन गौर ॥ रंगी० ॥
८ मनइछा फल पायो भामिनि, मधुराको चित चोर ॥ रंगी० ॥



(२) तथा

उसही के वज़न पर गणगौर का पद ।

सांवरिया घर आओ जी कन्हैया म्हेतो पूजांछां गणगोर ॥
१ तरस रही अंखिया दरशनकौ थेछौ जी म्हांका चितचोर ॥ सां० ॥
२ मृदु मुसिकान मनोहर थांकी गजबछे नैनारी कोर ॥ सां० ॥
३ ऋतु बसन्त वन उपवन सोभा मदन जनावत जोर ॥ सां० ॥
४ गौर भवानी वर दियो म्हाने मिलसी नंद किशोर ॥ सां० ॥
५ तन मन प्राण म्हे थांपर वारां झांकौ जी म्हांकी ओर ॥ सां० ॥
६ थेछौ पूरण काम विहारी मधुरा नमै कर जोर ॥ सां० ॥

(३) तथा पद

॥ गवर पूजन चली आज राधिका नवेली, इसके वज़न पर ॥

सखिन संग लखी गौर पूजती किशोरी ॥

१ सुंदर लोचन विशाल, हाथ लिये कनक थाल, ॥
गिरिजा गल हार डाल, बिनवत करजोरी ॥ सखि० ॥

२ षोडस उपचार साज, पूजी गणगौर आज, ॥
गिरिधर बर प्रीति काज, याचना बहोरी ॥ सखि० ॥

३ अलिगण मिल करत गान, गणगौरी गुण बखान, ॥
बाजत नौबत निशान, मंगल चहुं ओरी ॥ सखि० ॥

४ दीनो अविचल सुहाग, छिन २ बढे नेह राग ॥
रसिकन के जागे भाग, बोली हँस गौरी ॥ सखि० ॥

५ शुभ औसर को निहार, सुर उचरैं जैजैकार, ॥
मथुरा बलिहार कहै, धन्य धन किशोरी ॥ सखि० ॥

॥ फूल शृंगार का पद ॥

॥ पनिहारी की चाल में ॥

कुंजन माहीं राजै सोहनी फुलवारी हो। चल सखी बेग निहार ॥ प्यारी हो०— ॥ ॥ ॥

१ सिंहान सोहै मध्य में मनोहारी हो। कुसुम रचित सुखकार ॥ प्यारी हो०— ॥ ॥ ॥

२ श्यामा संग राजै सांवरे बनवारी हो। किये फूल शृंगार ॥ प्यारी हो०— ॥ ॥ ॥

३ मुकट कुंडल गल कंठिका पच तारी हो। पुष्पन से तैयार ॥ प्यारी हो०— ॥ ॥ ॥

४ पहुंची और भुजबंद की छबि न्यारी हो। उर पै चौसर हार ॥ प्यारी हो०— ॥ ॥ ॥

५ नथ बेसर वर चंद्रिका प्रिया धारी हो। सुमन रचित अलंकार ॥ प्यारी हो०— ॥ ॥ ॥

६ कुसुम रचित कटि किंकणी लागै प्यारी हो। धारी युगल सरकार ॥ प्यारी हो०— ॥ ॥ ॥

७ कुसुम कली पाज़ेब है पद धारी हो। सोभा अपरंपार ॥ प्यारी हो०— ॥ ॥ ॥

८ दोउ मगन रस प्रेम में पिया प्यारी हो। मथुरा निरख बलिहार ॥ प्यारी हो०— ॥ ॥ ॥



॥ ग़ज़ल ॥

* फूल बंगले के उत्सव की ।

फूलोंकी कुंज बाग़में सोभा अपार है ॥
क्या खिलरही युगल की री जोबन बहार है ॥ १ ॥
हँस्ती हुई चमेली है अलबेली शान से ॥
छैली नवेली बेला अजब आनदार है ॥ २ ॥
देखौरी केतकी है भरी पूरी हेत की ॥
जूही की मस्त बूई पै चम्पा निसार है ॥ ३ ॥
फूलों से आली जन ने सजाया है श्याम तन ॥
प्रीतम ने प्यारी जीका किया खुद सिंगार है ॥ ४ ॥
बेसर बुलाक़ बाले हैं पुष्पों के सोहने ॥
सीने पै मनका मोहना चौसर का हार है ॥ ५ ॥
फूलोंकी गेंद हाथ है सखियों के साथ में ॥
रस खेल हो रहा है खुशी बेशुमार है ॥ ६ ॥
ब्रह्मादि सुर तरस्ते हैं जिस रसके लेशकौ ॥
मधुरेश लाड़ली का ये वो बन बिहार है ॥ ७ ॥

तथा पद

॥ रोकै मेरो गैलवा मैं कैसे जाऊं पनियां, इसके वज़न पर ॥

राजे फूलवारियों में राधे हरि भामिनी ॥
फूलन रचित चन्द्रिका सोहै । सीस फूल बेना मन मोहै ॥
कर्ण फूल फूलनके झुमके । सबही भूषन सजे कुसुम के ॥

सारी गुलनारी ओढे ठारी प्यारी कामिनी ॥ राजै० ॥
बहुबिधि कुसुम अलंकृत प्यारो । प्रिया प्रेमरस मद मतवारो ॥
कबहुक दर्पन करले धावैं । कबहु प्रिया को पान खिलावैं ॥
हिये हुलसावे अति श्यामा सुख धामिनी ॥ राजै० ॥
अजर अमर अविगत अविनासी । ब्रह्मादिक जाकी करत खवासी
सो हरि श्रीराधा पद परसै । प्रेम प्रभाव प्रघट इम दरसै ॥
जैजै प्यारी बलिहारी मथुरा की स्वामिनी ॥ राजै ॥

नौका बिहार के पद

॥ नौका में विराज कर युगल सरकार का विहार ॥

करेंरी दोऊ नौका बेठ बिहार ॥ करेंरी० ॥
लहरें लेत हेत भरि जमुना जल बिच नवल बहार ॥
अं—चतुर चतुर दोउ ओर अलीजन राजैं खेवन हार ॥
मल्ली भेस करन बिच बल्ली खेवैं राग उचार ॥
हँसहँस दरस परस रस लेवैं बढत परस्पर प्यार ॥
जलचर केलि उमंग नवेली निरखत मुदित अपार ॥
तटवन उपबन सघन निकुंजन सोभा अपरम्पार ॥
घाट घाट नये नये ठाठसे निरख रही ब्रज नार ॥
मोर कोकिला सोर करत मानो गावत मंगला चार ॥
धरि उमंगमन युगल चरणकौ परसत पवन सिधार ॥
घनकी घटा चहूंदिस छाई धन्य समय सुखसार ॥
युगल चरण ध्याये मथुराकी नैया होगई पार ॥

॥ नौका-बिहार का दूसरा पद ।

॥ ग़ज़ल ॥

नौकामें श्यामा संग बिराजे गुपाल हैं ॥
छबि देख मनहि मन में सखीजन निहाल हैं ॥ नौका० ॥
गुलनारी सारी प्यारी के तन कैसी सज रही ॥
मुखचंद्र की किरन का गुलाबी सा जाल है ॥ नौका० ॥
प्रीतम के तन पै डटरहा कैसाहै पीत पट ॥
ज्यों श्याम घन में इंद्र धनुष का जमाल है ॥ नौका० ॥
मौजैं उडाती जमुना उछलती उमंग से ॥
पीतम का पाया बहुत दिनौं में विसाल है ॥ नौका० ॥
बेला चमेली फूलों से नौका सजी हुई ॥
तिरता है चांद चौथका ऐसी मिसाल है ॥ नौका० ॥
खेती हुई सहेलियां हिल मिल के चाव से ॥
तारा गणों में चँद्र चलै ऐसी चाल है ॥ नौका० ॥
देवांगना उमंग से बरसाती फूल हैं ॥
मथुरेश राधे रानी की महिमा बिशाल है ॥ नौका० ॥

(जलयात्रा का पद ॥ राग सारंग का दादरा)

जल बिच बिहरैं युगल बिहारी ॥
केलि विनोद हौद के माहीं । मोद भरे करैं पिया और प्यारी ॥ जल० ॥ १ ॥
अष्ट सहेली रूप नवेली । अलबेली छवि भानु दुलारी ॥ जल० ॥ २ ॥

चलत फुवारे धार हज़ारे । प्यारे पवन की गति मत-
वारी ॥ जल० ॥ ३ ॥
वारि उलीचैं अँखियां मीचैं । सींचैं प्रेम सलिल दिल
क्यारी ॥ जल० ॥ ४ ॥
दरस परस रस लेत रसीले । कबहुक हँस मारत किल-
कारी ॥ जल० ॥ ५ ॥
झक झोरत कबहुक जल बोरत । अतिहि निहोरत मथु-
रा हारी ॥ जल० ॥ ६ ॥

॥ श्रीगोविन्दजी महाराजकी जलयात्रा पर ग़ज़ल ॥

अहो गोविन्द राधेजू ने जलक्रीडा मचाई है ॥
ये धनहै जय नगर माधोकी जिस्मैं प्रभुताई है ॥
दोहा—बृन्दाबन से आगमन , जयपत्तन के मांहि—॥
कियेप्रभू हरि जननहित,अस कृपाल कोउ नाहि॥
फिरी इस राज्यमैं गोविन्द प्योरकी दुहाई है—॥ अ० ॥ १ ॥
,,—अतिहि मगनमन लाडिली,सखियन संग नहात॥
उमंग २ गोविन्द पिय मीडत प्यारी गात—॥
है जलजात्रा मनोहारी चहूंदिस धूम छाई है ॥ अ० ॥ २ ॥
,,—किलकत दंपत रसभरे, जल छिरकत बहु मोद॥
गहिरे जल डरपत प्रिया धावत पियकी गोद—॥
लपक गोविन्द ने श्यामा गले से आ लगाई है॥ अ० ॥ ३ ॥
,,—चलत फुवारे सोहने , सीतल मंद समीर॥
शुभ दर्शन मन मोहने जय राधे बलबीर—॥
जुगल छबि देख मथुरा ने खुशी बेहद मनाई है ॥ अ० ॥ ४ ॥

बरसातीराग

(१) ॥ सोरठ मलार ॥

बस्योरी आली दृगन वोही चित चोर ॥
सुंदरतापै जाके छिनछिन वारूं, मदनसे लाख किरोर॥ हेबस्यो.॥
सावन के मन भावन घन सम, श्यामल नवल किशोर ॥
बंसी रव जहां गरज मनोहर, गोपी जन मन मोर ॥ हेबस्यो०॥
कुण्डल द्युति तहां लसत दामिनी, केश घटा घनघोर ॥
रस के बैन स्वांतकी बूंदैं, हम चातक मुख जोर ॥ हेबस्यो०॥
मधुर बचन अति मृदुल विमल तन, मनको परम कठोर ॥
मथुरा ओर निहारत नाही, बरसत ठौर कुठौर ॥ हेबस्यो०॥

---

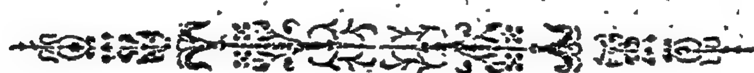
(२) तथा

बरषा ऋतु बैरिन आई ॥ सखी दूर बसैं ब्रजराई ॥ रीबरषा०॥
घनकी गरज बज्र सम लागत दामिनि सेल चलाई ॥
बूंदन बाण सहे नहि जावैं तरपत हूं घबराई ॥ री बरषा०॥
रैन अँधेरी मोहि बिरहानै घेरी तुमबिन कौन सहाई ॥
दादुर मोर पपीया पापी छिन छिन बोल सताई ॥ री बरषा०॥
बादरवा तोरी करूं बीनती मथुरा मैं बरसहु जाई ॥
कुबरी संग रंग म माते जहां वे कुंवर कन्हाई ॥ री बरषा०॥

॥ निसदिन बरसत नैन हमारे ॥ इस के वजन पर ॥

{गौड मलार}

(३) छिन छिन गरजत मदन कहारे ॥ छिन २ ॥
प्रिया सहित करुणानिधि गिरधर, हैं हमरे रखवारे ॥ छिन० ॥
मेहा बरसत जियरा तरसत तू मत देह जरारे ॥
पिहु पिहु बैन पपैया के सुन ऐहैं बेग पियारे ॥ छिन०२॥
सुरपति कोप कियो ब्रज ऊपर सहस्र धार बरसारे ॥
धर गिरिवर नख पर राधावर चर अरु अचर उबारे ॥ छिन० २॥
ज्यों मथुरेश धार नर हरि तन क्लेश भक्त के टारे ॥
त्यों तव मद निःशेष करन को प्रगटैं प्राण बचारे ॥ छिन० २॥



(४) ॥ सोरठ मलार ॥

बरसाने वन सरसाने । घन घुमंड वहीं बरसानेजी ॥ बरसा० ॥
मेघकी धारन रूप हजारन वान काम सन्धाने ।
सखिन फौज सज मौज दिखावत भानु कुंवर कपताने जी ॥
बरसाने० ॥ १ ॥
घनकी गरज तरज दामिनकी भामिन मन ललचाने ।
प्रीत पुञ्ज हरि राधा हिल मिल कुञ्ज २ हरषाने जी ॥
बरसाने० ॥ २ ॥
गहवर बन लखि अधिक सुहावन नन्दन बन सकुचाने ।
त्रिभुवन पति मथुरेश लाडली संग जहां रति माने जी ॥
बरसाने० ॥ ३ ॥

(५) ॥ सोरठ मलार ॥

हे मुरलिया धारी । नाहि तिहारी परतीत ॥ हे मु० ॥
तन मन गोपीजनको हरके पाली तनक न प्रीत ॥ हे मु० ॥
जो अनंग तुम रास रंग रचि ब्रज मैं लीनो जीत ।
बरषा मैं सो हमहि सतावत बैठे आप निचीत ॥ हे मु० ॥
निस अंधियारी कारी बदरिया गरज करत भय भीत ।
बिजुरी तरज हियो लरजावत तुमबिन और न मीत ॥ हे० ॥
पीत बसन धर नाहि लजावो अन्तर नैक न प्रीत ।
तुमरे गुण मथुरेश सो जाने जो बांध्यो अलिगीत ॥ हे मु० ॥

---

(६) गोपीका बचन राग सोरठ मलार)

बदरी अरी मत इतरावै ॥ कहा निबल पै जोर जनावै री ॥ व० ॥
उमंड घुमंड मोरे आंगन बरसै विरह अगिन भड़कावै ।
मद माते घनश्याम के अंगना क्योंनहिं बरसन जावे री ॥
बदरी अरी मत इतरावै०—॥ १ ॥
इतनी वासूं हमरी कहियो दया जो मन में आवे ।
दरसकी प्यासी कोउ इकदासी तुम बिन अति घबरावे री ॥
बदरी अरी मत इतरावै०— ॥ २ ॥
बैरिन कारी निस अंधियारी किस बिध काटी जावे ।
देख अकेली मदन सतावै बिजुरी सेल चलावै री ॥
बदरी अरी मत इतरावै०—॥ ३ ॥
रोम रोम मेरो भयो पनारो नैन नीर बरसावै ।
श्याम घटा मथुरेश हमारे हियमें प्राण रखावै री ॥
बदरी अरी मत इतरावै०—॥ ४ ॥

---

(७) गौड मलार

हरि बिन निस दिन हियो अकुलाई ॥
विरह ताप संतापित जनको ग्रीषम सहज सुहाई ॥ हरि० ॥
स्वाँत बूंदकौ चातक जैसे ताकत ध्यान लगाई ॥
त्यों हरि कृपा विन्दु की आसा राखत प्राण नचाई ॥ १ ॥
हायग्रीव की धुन निकसत ही गगन मेघ वन जाई ॥
सहस धार बरसे धरणी पर अस बरसा सुख दाई ॥ २ ॥
नेह नीर सागर बिच हरिजन डूबत जबहि लखाई ॥
तुरत धाय मथुरेश पिया तब भेटत भुज फैलाई ॥ ३ ॥



(८) राग सूर मलार

(आयेरी बादरवा बरसन आयेरी, इस के वज़न पर)

राजेरी सांवरिया मधुपुरि ॥ राजेरी०—॥
कारे कारे बादर उमंड घुमंड, घने वेगसे, मोरे अंगना बरसत
बिजुरी संग घन गाजै, मोर कोकिल बन मारैं अवाजैं
सेज परि घरि घरि हरिकौ तकत सखी ॥ सांवरिया० ॥
सुघर श्याम केह काजै, धाय बैरिन घर मथुरा बिराजैं
रस भरि छवि छिन नहिं बिसरत सखी ॥ सांवरिया० ॥

(९) ॥ राग गौड़ मलार ॥

पिय बिन पावस ऋतु नहि प्यारी ॥
श्यामघटा घनश्याम छटा बिन मारत हृदय कटारी ॥ पि० ॥
घनकी गरज तरज दामिन की हियो लरजावन हारी ॥
जो गरजिन हरि के मिलने की वाकौ छिन २ भारी ॥ १ ॥
ताप हटै नहि आस घटै नहि कटै न निसअंधियारी ॥
घायल होय बीर सो जानै और न पीर हमारी ॥ २ ॥
मोर कोकिला कूक सुनावे हूक उठै दुख कारी ॥
सूख सूख पिंजर भई काया पंछी प्राण दुखारी ॥ ३ ॥
चैन नही दिन रैन नैन तैं नीर अखंडित जारी ॥
अधिक अगिन भड़कत विरहा की ज्यों ज्यों छिड़कत वारी ॥४॥
राग मलार उचारत सखियां में बिरहिन दुखियारी ॥
रोय रोय हेरत बन बन मैं कहाँ मथुरेश बिहारी ॥ ५ ॥

(ये आई वो आई उमड़ घटा ॥ इस के वजन पर)

(१०) राग गौड़ मलार ॥

ये बरसें वो बरसें बादर गुइयां नैनारी तरसें तरसें ॥ ये बरसें० ॥
दामिन चौंक चमक इतरावे चातक बानी सरसै इधरसै उधरसै ॥
मो मन धीर बंधैया मोहन गये बहु बीती बरसैं न दरसें न दरसें ॥
मथुरापति अंधियारी निसामैं काँपरहीहूं डरसै जिधरसै तिधरसै ॥

(११) बरसाती चीज़ रागिनी सोरठ ॥

घनश्याम बिन कारी घटा डरपाती है मुझे ॥
अलबेली छवि प्यारी छटा तरसाती है मुझे ॥
दोहा—भेट भई नहि श्याम से जेठ मास गयो बीत ॥
आसा बढ़ी असाढ़ मैं मन उदास तन पीत ॥
पतिसंग सखियां चढ़ अटा ललचाती हैं मुझे ॥घन०॥
थर २ थर लरजत हियो घन गरजत अतिघोर ॥
मोर शोर सुन मोर तन जरत सुमिर चितचोर ॥
पिहु पिहु पपैया की रटन तड़पाती है मुझे ॥घन०॥
कहा बावरी बादरी बरस बरस इतरात ॥
नैन झरैं हरि दरस बिन यहां नित्य बरसात ॥
बरसात मन मोहन बिना नहिं भाती है मुझे ॥घन०॥
सीतल बूंदैं तनलगैं उनबिन अगिन समान ॥
रैन अंधेरी मैन दुख चैन नहीं इक आन ॥
मथुरेश बिन छिन नींद हू नहि आती है मुझे ॥

---

(१२) ॥ लावनी ॥

सावन मैं दूर मन भावन बिरह की माती ॥
नैनों से नीर बरसाती लिखी यह पाती ॥साव०॥
सुन प्राण पिया बल बीर मुरलिया धारी ।
मैं कौन करी तकसीर तिहारी भारी ।
मेरे कारी कलेजे मारी जो विरह कटारी ।
सिसकत हूं ज्यों जल हीन वो मीन बिचारी ।

तोहि दीन दयाल दया कैसे नहि आती ॥ नैनों० ॥
घन घोर घटा चढि आई कौन गत मेरी ॥
काटे नहि कटती बैरिन रैन अंधेरी ॥
अबहू तुम कृपा निधान लगावत देरी ॥
मेरि खातिर की किस हेत बज्र सम छाती ॥ नैनों० ॥
अब मूसर धार बरसने लागा पानी ॥
बिजुरी की चमक ने अजब करी हैरानी ॥
सारी सखियां हिंडोला झूलैं फिरैं इतरानी ॥
मैं तुम से ठानी प्रीत करी नादानी ॥
कर चेत वेग मथुरेश स्वांस है जाती ॥ नैनों० ॥

(१३) ॥ लावनी बरसाती ॥

बरसौ बरसौ घन वहिं जाके जहां बिराजैं मन्मोहन ॥
दुखिया जन को नाहिं सताते जो कहलाते हैं सज्जन ॥
गरज तिहारी सुनतहि उमगे बोलै बन बन मोरा रे ॥
हम को यातैं गरज कहा है हरि चरणन मन जोरारे ॥
पर जब पिहु पिहु रटे पपीहा होत कष्ट अति घोरारे ॥
तौ हू बैरी प्राण न निकसे पापी जीव कठोरारे ॥
दयावंत नहि कंत हमारे बेदरदी है नंद नंदन ॥ बरसौ० ॥ १ ॥
दामिन को जब तड़पत देखूं धरती परी लजाती हूं ॥
इसकी न्यांई तडप २ मैं क्यों अकास नहिं जाती हूं ॥

श्याम बियोगिन हौं हत भागिन परी भूमि अकुलाती हूं ॥
मेघ श्याम की अंक में वा कू देख अधिक ललचाती हूं ॥
हाय प्राणपति हाय नाथ यूं धाय बिलाप करूं बन २॥ बर० ॥
स्वांत की बूंदनतें वो चातक तृप्त भयो मतवारो है ॥
पृथ्वी रानी खूब अघानी पायो जल निज प्यारो है ॥
कहियौ हरसे कौन चूक पै हम को नाथ बिसारो है ॥
दयावन्त करुणा निधान प्रण काहे कौ प्रभु धारो है ॥
सुमिर बेग मथुरेश आपनो गुण त्रिशेष जन दुख भंजन ॥
बरसौ बरसौ०— ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

---

(१४) मलार सोरठ वा गौड़ दोनो में)

पिया के संग, पावस परम सुखारी— ॥
नवल निकुंज नवल तन जोबन युगल नवल छबिधारी ॥ पि ॥
१ सघन भूमिपै लूम झूम घन बरसावत रसवारी ॥
मोर शोर कोकिल मृदुबानी सुन हरषैं पिय प्यारी ॥ पिया०॥
२ श्यामल अंग पीतपट सोहै हरित प्रिया तन सारी ॥
अंग २ फूलन के भूषण चितवन कामनगारी ॥ पिया०॥
३ सीतल पवन अंग पुलकावत प्यारी लगत फोआरी ॥
रागमलार सखीजन गावत छबिलख तनमन वारी ॥ पिया०॥
४ हिलमिल करत किलोल परस्पर आनद उमग अपारी ॥
अनुपम सोभा प्रिया प्रीतम की लखिमथुरा बलिहारी ॥ पिया०॥

(१५) अथ हिंडोला लीला

॥ सोरठ मलार में हिंडोला ॥

रंगीली राधे झूलत गुमान भरी ॥ हे रंगीली०—॥
ललितादिक की और न देखैं झोटा देत हरी ॥ हे रंगी० ॥१॥
सीतल मंद सुगन्धित वायू जमुनातीर अरी ॥
बरषा ऋतु सब ठाट रंगके रिध सिध लिये खरी ॥ हे रंगी० ॥२॥
तीन लोक नायक पुरुषोत्तम वाही के बसरी ॥
वाही की मथुरेश पियाने चितवन चित में धरी ॥ हे रंगी० ॥३॥

(१६) ॥ हिंडोला ॥

जमुना तट बंसीवट छैंया झूलत कृष्ण कन्हैयारे ॥
राज दुलारी राधाप्यारी संग डार गलबैयां रे ॥ जमुना० ॥
पीताम्बर गिरिधर तन सोहै प्यारी सुन्दर सारी रे ॥
जिस २ ने वो छबी निहारी लीनी जुगल बलैयां रे ॥ जमु० ॥
रेशम डोर जड़ाउ हिंडोरा तापर सुन्दर जोरी यह ॥
दौर २ झोटा दे सखियां परसत हरि के पैयां रे ॥ जमुना० ॥
श्यामघटा घनश्याम छटा लख मोर रटै चहूं ओर घने॥
दामिनि देख डरात लाडली अंक गहै तब सैयां रे ॥ जमुना० ॥
घन की गरज छिपावन को हरि बंसी शब्द सुनावै रे ॥
परमानन्द मगन मथुरा लखि गावै मोद बधैयां रे ॥ जमुना० ॥

(१७) ॥ सोरठ में हिंडोला ।

हिंडोरे झूलैं राधे संग गुपाल ॥ हैं हिंडोरे०— ॥
रूप अनूपम प्रिया प्रीतम को निरख मुदित व्रजबाल ॥ हे० ॥
प्रेम सरोवर तीर कदमतर सुन्दर साज समाज ।
बाज रहे मधुरे सुर बाजे गावत गोपी ग्वाल ॥ हे० ॥
झोटा देत विशाखा ललिता मुखहिं निहार निहार ।
राग मलार लाडली गावत बंशी बजावत लाल ॥ हे० ॥
झूम झूम घन बरसन लागे चलत अधीर समीर ।
मोर शोर कोकिल कलरव सुन उमग बढी तत्काल ॥ हे० ॥
पुलक गात लखि पियके किशोरी सखियनसे सकुचात ।
बिजुरि के डरसे हरि उरलागी भये मधुरेश निहाल ॥ हे० ॥

---

(१८) ॥ हिंडोला ॥

उच्छव निहारो सखी युगल झूलन को ॥ उच्छव० ॥
फूलन को झूला सोहै छबियाकी मन मोहै ॥
पूतरो खरो है मानो रूप के सदन को ॥ उच्छव० ॥
नानी नानी बूंदन बरस रह्यो है घन ॥
चपल पवन मानो दूत है मदन को ॥ उच्छव० ॥
झोटा देवैं बारी बारी सखियां उमंग भारी ॥
गावैं मिल सारी राग सोहनो श्रवन को ॥ उच्छव० ॥
बांसुरी बजावै नाथ लाडिली जी गावैं साथ ॥
प्यारी को गरे में हाथ जीवन ललन को ॥ उच्छव० ॥

कुंज की अनूठी सोभा मन उपजावै छोभा ॥
युगल हिये में लोभा बढत रमन को ॥ राजत० ॥
मथुरा निहारै छब तन मन वारै सब ॥
ये है सारो करतब वाँकी चितवन को ॥ राजत० ॥

(१६) ॥ हिंडोला ॥

(बनाम्हाने प्यारो लागे हे ॥ इस के वजन पर)

अटारियों मैं श्यामा रंगभीनी हे (माए)
झूलरही प्यारे संग ॥ अटारियों०— ॥
१—झुलावैं चहुं दिस सखियां हे (माए)
अनुपम सुंदर श्याम मदन को रूप लजावे हे ॥ अटा० ॥
२—किशोरी छबि लख रसिया हे (माए)
वारत तन मन प्राण चन्द्रमुख नैन चकोरी हे ॥ अटा० ॥
३—हिंडोरो रतनन जरियो हे (माए)
फूलन गुथियां डोर उमंग मन लेत हिलोरो हे ॥ अटा० ॥
४—लुभावनि रितु घन छैयां हे (माए)
रुम झुम बरसत मेह लगतहै फवार सुहावनि हे ॥ अटा० ॥
५—उचारैं सखियां मलारैं हे (माए)
मुरली रव सुखकार हियन की ताप निवारैं हे ॥ अटा० ॥
६—बिहारी नवल बिहारन हे (माए)
मथुरा जोरै हाथ बिरह की पीर निवारी हे ॥ अटा० ॥

(२०) राग गौड़ मलार हिंडोला ॥

देखौरी झूलैं २ हिंडारे प्रियाजी सांवरिया के संग ॥ देखो० ॥
राग गावत सगरि सखियां हिल मिल दिलके कमल फूलैं २ ॥
घनकी घुमड वरषा ऋतु प्यारी वायु पुरवा पुलकित अंग ॥
मोर बोलत बन कोयलिया कूजत मधुरा सकल दुखभूले॥दे०॥

(२१) हिंडोला जयपुरी भाषा में ॥

श्यामा प्यारी संग झूलै मन को भावनो ए ॥
चालौ चालौ री सहेल्यां, देखां देखांरी रस केल्यां, ।
झोटा देवै छे नवेल्यां, रस बरसावनो ए ॥ श्यामा०॥१॥
भारी रतनाको हिंडोल, ऊंकी डोरयां छे अनमोल, ।
थांने देख्यां पड़सी तोल, अधिक सुहावनो ए॥ श्यामा० ॥२॥
बरसे रुम झुम रुम झुम मेह, भीजी सोहै प्यारी देह, ।
बाढै निरख सनेह, दिल ललचावनो ए ॥ श्यामा० ॥३॥
ललिता झांके हरिकी ओर, प्यारा मुलकै छे मुख मोर, ।
बन में नाचैं पंछी मोर, चित्त लुभावनो ए ॥ श्यामा० ॥४॥
हींढ़ो ज्यों २ झोटा खाय, प्यारी श्याम अंग लिपटाय, ।
प्यारो छातियां लगाय, सुख पावनो ए ॥ श्यामा० ॥५॥
सखियां गावें छे मलार, कोई देवै छे रस गार, ।
बाढ़ै आनंद अपार, सुन रस गावनो ए ॥ श्यामा० ॥६॥
झूलैं प्यारी संग सुजान, मधुरा वारै तन मन प्राण, ।
येही युगल को ध्यान, चित में लावनो ए ॥ श्यामा० ॥७॥

(२२) ॥ मूंगेकी चाल में झूला ॥

झुलावैं संग साथ की अली अरे हां हां ॥
दोऊझूलैं नवल किशोर किशोरी, झुलावैंसंग साथकी अली॥अ०॥
सेवा कुंज पुंज सोभा की, होवै तहां रंग रली ॥ अ० ॥
नंदढोटा छबि लखन चंद्रावलि, झोटा देन चली ॥ अ० ॥
बरसत मेह नेह द्रुम सरसत, रति की बेल फली ॥ अ० ॥
रूप उजागरि सब गुण आगरि, नागरि भानुलली ॥ अ० ॥
निकसत हैं रसबैन प्रेम के, बिकसत मनकी कली ॥ अ० ॥
झूलत श्रीमथुरेश लाडिली, धन यह ब्रज की थली ॥ अ० ॥

(२३) ॥ झूला ॥

झूलत नवेली राधे कालिन्दी की तीर ।
संग मैं बिराजैं प्यारे दाऊजी के बीर ॥ झूलत० ॥
कदम की डारियों में कनक जंजीर ।
जडित हिंडोरा सोहे भई भारी भीर ॥ झूलत० ॥
उमंग हिलोरैं लेवे जमुना को नीर ।
हौरे हौरे झोटा देवैं सुरभ समीर ॥ झूलत० ॥
श्याम ओढे पीर पट गोरी नीलो चीर ।
श्यामघन माहीं मानो दामिन अधीर ॥ झूलत० ॥
घन की गरज सुनि कठिन गंभीर ।
प्यारे उरलागी प्यारी नाजुक सरीर ॥ झूलत० ॥
चलन लगेरी तीखे नैनन के तीर ।
मथुरा मिटाई दोऊ मदन की पीर ॥ झूलत० ॥

(आवत श्याम लटक चल मुकट धरे ॥ इस के वजन पर)

(२४) [झूला]

झूलत दोउ मगन मन उमग भरे ॥ झू० ॥
सखियां रस मैं छकी छबि कौ उर मैं धरे ॥ झूलत० ॥
उमडत घुमड घूम बादरवा बरसत रुम झुम वारी ॥
पौन चलै मन हरषात भारी ॥ झूलत० ॥
हिल-मिल अली देत हैं झोटा निरखत पिय मुख प्यारी ॥
मथुरा चकित लख धज आज न्यारी ॥ झुलत० ॥



(हिंडोला श्रीरघुनाथजी महाराज का)

(२५) ॥ राग सोरठ मलार ॥

हिंडोरे झूलैं सिया रघुनंदन आज ॥
सरजू तीर सघन उपबन मैं अलिगण रच्यो समाज ॥ हिं०॥
१—अतिही सुखद सरस ऋतु पावस मेघ रहे नभ गाज ॥
राग मलार सखी मिल गावैं बाजे रहे हैं बाज ॥ हिं०॥
२—मोतिन डोर जडाऊ चौकी अति सुंदर सब साज ॥
गरबाहीं दिये उमंग हिये भरि नवल युगल रहे भ्राज ॥ हिं०॥
३—रस भरे नैन नेह भरी चितवन हसन अज अंदाज ॥
झोटन तैं तन बसन उड़त कछु प्रिया दृग छाई लाज ॥ हिं०॥

४ उमा रमा शचि लखि ललचावैं प्रिया मन जो सुख आज ॥
मथुरा दास कौन मुख बरणै धन दम्पति रस राज ॥हिं०॥

तथा हिंडोला श्रीराधा गोविंद का ॥

हिंडोला झूलैं प्रिया प्रीतम संग आज ॥
जमुना तीर सघन कुंजन में अलिगण रच्यो समाज ॥हिं०॥
बाकी सब अंतरे ऊपर के ज्योंके त्यों नम्बर २५ के इस में बोले जावें ॥

(२६) ॥ हिंडोला ॥

(चलो पिया बांही कदमतर झूलैं ॥ इस के वजनपर)

श्यामां संग झूलैं रसिक बनवारी ॥
जमुना के तीर कदम की छैयाँ बरस रह्यो रस भारी ॥ रसिक०॥
१ झूलैं युगल नवल प्रिया प्रीतम रसिकन प्राण अधारी ॥
२ घनकी घटा लगै अति प्यारी—नानी२परत फुआरी ॥
३ सखियां झुलावैं मलारैं गावैं—मथुरा छबि पर वारी ॥

(२७) ॥ हिंडोला ॥

नाटक की चाल

(होरे सैयां परूं में तोरे पैयां रे सताओ काहे मोको ॥ इस के वजनपर)

सीरी छैयां किशोरी संग सैयां रे हिंडोरे झूलैं सजनी ॥

जमुना किनारे झूलैं दोऊ रसीलेरी, सखी गावैं सावन की मीठी रागैं ॥ अरे हां ४ ॥ प्यारे रसिया हैं भारी वो बिहारी, दिखारी मोको सैयां, मैं लागूं तोरे पैयां, मन हरियां, रस भरियां, शुभ घरियां, हिये धरियां,–मेहा बरसे बिजुरि चमकाय रे हां ५ बरसाय, सरसाय, चितलाय, दरसाय ॥ सीरी० ॥ मथुरा मुखसे न कछु कहिजाय रे हां ५ हुलसाय, चलधाय, बलिजाय, गुणगाय, ॥ सीरी० ।

॥ हिंडोला ॥

* ये बर्सै वो बर्सै बादर गुइयां इस के वजन पर *

ये झूलैं वो झूलैं माधव सैयां, कालिन्दी कूलैं २ ॥ ये झू० ॥
श्यामल तन सोहत पीताम्बर, घनदामिन सम तूलैं ॥ ये झू० ॥
जमुना मन उमंग दरसावत, बिमल कमल फूलैं २ ॥ ये झू० ॥
डार २ तरु ऊपर व्रज जन, सखिन भीर मूलैं २ ॥ ये झू० ॥
श्रीराधा नवतरुणि मुकट मणि, क्रीडत प्रिय अनु कूलैं ॥ ये झू० ॥

इति समाप्त

॥ श्री ॥

* श्रीहरिर्जयति *

॥ नित्य सेवा आरती के पद ।

॥ आरती का पद ॥

आरति मंगलकारी युगलकी आरति मंगलकारी ॥
व्रजनागरी रूप गुण आगरि करले कंचन थारी ॥
जारि अनेक कपूरकी बाती आरति करन सिधारी ॥ यु० ॥१॥
श्यामा श्याम निकुंज भवन में अनुपम शोभा धारी ॥
रत्न सिंहासन राजैं दोऊ कोट मदन बलिहारी ॥ यु० ॥२॥
घंटा शंख झालरी बाजैं सखियां बजावन हारी ॥
ललिता आदिक अष्टसहेली आरति उमंग उतारी ॥ यु० ॥३॥
दम्पतिकी मुसिकान मनोहर चितवन कामन गारी ॥
आरति गावत मोद बढावत मथुरा मन दियोवारी ॥ यु० ॥४॥

(२) ॥ वन्दना ॥

१—धेयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं ॥ ॥
तीर्थास्पदं शिवविरिंचिनुतं शरण्यम् ॥ ॥
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं ॥ ॥
वंदे महापुरुष ते चरणारविंदम् ॥ ॥

२—वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते ॥
दैत्यं दारयते वलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते ॥
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्य मातन्वते ॥
म्लेच्छान् मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यंनमः ॥

३—श्रीनारायण पुण्डरीकनयन श्रीराम सीतापते ॥
गोविंदाच्युत नन्दनन्दन मुकुन्दानन्द दामोदर ॥
विष्णो राघव वासुदेव न्टहरे देवेन्द्र चूडामणे ॥
संसारार्णव कर्णधारक हरे श्रीकृष्ण तुभ्यं नमः ॥

४—अंभोधिः स्थलतां स्थलं जलधितां धूलीलवःशैलताम् ॥
शैलो मृत्कणतां तृणं कुलिशतां वज्रं तृणक्षीणताम् ॥
वन्हिःशीतलतां हिमं दहनता मायाति यस्येच्छया ॥
लीलादुर्ललिताद्भुतव्यसनिने कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥

---

(३) (ध्यानम्)

१—कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षस्थले कौस्तुभं ।
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुं करे कङ्कणम् ॥

सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावलिं ।
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपाल चूडामणिः ॥

२—फुल्लेन्दीवरकान्ति मिन्दुवदनं वर्हावतंसप्रियं ।
श्रीवत्साङ्क मुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ॥
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गो गोप संघावृतम् ।
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे ॥

३—अंसालम्बित वामकुंडलधरं मन्दोन्नतभ्रूलतम् ।
किंचित् कुंचित कोमलाधरपुटं साचिप्रसारेक्षणम् ॥
आलोलाङ्गुलिपल्लवे मुरलिकामापूरयन्तं मुदा ।
मूले कल्पतरो स्त्रिभङ्गललितं ध्याये जगन्मोहनम् ॥

४—वालं नवीनशतपत्रविशालनेत्रम् ।
बिम्बाधरं सघनमेघरुचिं मनोज्ञम् ॥
मन्दस्मितं मधुर सुन्दर माननं तम् ।
श्रीनंद नन्दन महं मनसा स्मरामि ॥

---

(४) ॥ प्रार्थना ॥

१—हे गोपालक हे कृपाजलनिधे हे सिंधुकन्या पते ।
हे कंसान्तक हे गजेन्द्र करुणा पारीण हे माधव ॥
हे रामानुज हे जगत्त्रयगुरो हे पुण्डरीकाक्ष मां ।
हे गोपीजननाथ पालय परं जानामि नत्वां विना ॥

१—त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव वन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

२—हे राधे वृषभानु भूपतनये गान्धर्विके राधिके ।
हे कृष्णाननपङ्कजभ्रमरके कृष्णप्रिये माधवि ॥
हे वृन्दावननागरीगुणगुरो दामोदरप्रेयसी ।
हेहे श्रीललितादिकप्रियसखि प्राणाधिके पाहि मां॥

३—हे राधे वृषभानुभूपतनये हे पूर्ण चन्द्रानने ।
हे कान्ते कमनीय कोकिलरवे वृन्दावनाधीश्वरी ॥
हे मत्प्राणपरायणे च रसिके हे सर्व यूथेश्वरी ।
४ आगत्य त्वरितं प्रतप्तमनसं मां दीन मानन्दय ॥

---

(५) ॥ शरणागतिः ॥

५—अहो बकीयं स्तन कालकूटं जिघांसया पाययदप्यसाध्वी ।
लेभे गतिं धात्र्युचितां ततोऽन्यं कंवादयालुं शरणं व्रजेम ॥

६—न धर्म निष्ठोस्मि न चात्मवेदी— ॥
न भक्तिमांस्त्वच्चरणारविन्दे । ॥
अकिंचनोऽनन्यगतिः शरण्य— ॥
त्वत्पादमूलं शरणं प्रपद्ये ॥ ॥

७—अपराधसहस्रभाजिनं पतितं भीमभवार्णवोदरे ।
अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवल मात्मसात् कुरु ॥

८—हे नाथ शरणं देहि मां भक्तं शरणागतं

सर्वाध्य सर्व निलय सर्व वीज सनातन ॥
सर्वाधार निराधार साक्षिभूत परात्पर ।
दुष्पारासारसंसारकर्णाधार नमोऽस्तुते ॥

(६) श्रीकृष्णचन्द्र मुकन्द गिरिधर सुघर सुन्दर लोचनम् ।

यह अष्ट पदी विनय सुधाकर पद नम्बर (६४) तथा पृष्ठ नम्बर (४७) की इस जगह बोलना चाहिये

(७) ॥ दोहा ॥

प्रणत पाल रघुवंशमणि , करुणा सिंधु खरारि ।
गहे शरण प्रभु राखिहो , सब अपराध बिसारि ॥
नहि बिद्या नहि बाहुबल , नहि खरचन कछु दाम ।
मोसे पतित पतंग की , तुम पति राखौ राम ॥
राधे तू बड भागिनी , कौन तपस्या कीन ।
तीन लोक तारण तरन , सो तेरे आधीन ॥
राधे तेरे पुन्य को , पायो नाही पार ।
पहले तू पीछे हरी , गावत सब संसार ॥
बार बार वर मांगि हों , हरष देहु श्रीरंग ।
पद सरोज अनपायनी , भक्ति सदा सतसंग ॥
चरण कमल रति दीजिये , मेट सकल भव क्लेश ।
टेर सुनौ हरि भक्त की , राधा वर मथुरेश ॥

(८) प्रभाती। राग भैरों

अरुण उदय शुभ समय युगलकौ सखियां धाय जगावैं॥
मधुर मधुर अनुराग भरेस्वर राग प्रभाती गावैं ॥ अरु०
बीती रैन चैनसै सारी मंद भई शशिकी उजियारी ॥
अस्तुत करैं गगन सुरनारी मुनि गण विनय सुनावैं ॥१॥
चलत सुगंधि समीर सुहायो जमुना नीर लहरायो ॥
पंछी गण है शोर मचायो दर्शन मन ललचावैं ॥ २ ॥
चरण कमल मकरंद लुभाने मन मधुकर तरसाने ॥
चहुंदिस डोल रहे बौराने कब दर्शन सुखपावैं ॥ ३ ॥
जल झारी लिये कोई कलेवा लाई मिसरी मेवा ॥
सखियां चहैं प्रभू पद सेवा मधुरा हरि जस गावै ॥



(९) ॥ तथा ॥

पीतम संग उमंग भरी अति चैनसै रैन बिताई ।
अलसाने लख नैन प्रियाके सखियन सैन चलाई ॥पी०॥
प्यारी को मुख निरख बिशाखा कछुक मंद मुसिकाई ।
ललिता कहै आजकी शोभा कापर बरणी जाई ॥ पी० ॥
रतनारे दृग प्यारेके लख श्यामा मन सकुचाई ।
झुंड झुंड सखियां उठ धाईं गावत मोद बधाई ॥ पीतम० ॥
एक ओर करजोर खडे बहु दीन भक्त समुदाई ।
कृपादृष्टि तिन पर महारानी कर हिय तपन बुझाई ॥ पी० ॥
मधुरा अधम भिकारी हू तब अरजी धाय सुनाई ।
स्वामिन तुरत दया दरसाई वांछित भिक्षा पाई ॥पीतम०॥

(१०) ॥ प्रभाती ॥ राग कालंगडा

जीवन धन मोरी सो ही गौर श्याम जोरी ।
निर्मल शशिवदन दोउ नयन मम चकोरी ॥जीवन०॥
१—सनमुख है सखि समाज हाजिर सब सुखके साज ।
सिंहासन रही ब्राज पीतम संग गोरी ॥ जीवन० ॥
२—लज्जा कछु एक ओर सरसत उत मदन जोर ।
नैनन की कोर करत अदभुत चित चोरी ॥ जीवन० ॥
३—कोमल कर परस गात हँस हँस पिया करत बात ।
प्यारी सकुचत लखात वारी जिम भोरी ॥ जीवन० ॥
४—प्यारी गरे चंद्रहार ता बिच पिय छवि निहार ।
होत मुदित बार बार भामिनी किशोरी ॥ जीवन० ॥
५—मथुरा कर जोर कहै झांकी मन बसी रहै ।
पद पंकज रेणु गहै आसा सब छोरी ॥ जीवन० ॥

---

(११) कलेवेका पद राग सिन्धभैरवी ।

करत कलेऊ युगलविहारी ॥
माखन मिसरी मोदक मेवा । और सामग्री कछुक सुखारी ॥ १ ॥ दम्पति हास विनोद परस्पर । जेमत समय करत सुखकारी ॥ २ ॥ प्यारी कहै प्यारे माखन जेमौ । माखन चोरीमें रसभारी ॥ ३ ॥ बोले श्याम बतादो प्यारी । अधरसुधामें स्वाद कहारी ॥ ४ ॥ आप समान तूलोकी माहीं । नहि या रसकी जाननहारी ॥ ५ ॥ अस विध कियो कलेऊ दोऊ ।

बोले ललिते पान खिलारी ॥ ६ ॥ बीरी चाव मुदित भये दम्पति । मथुरा वा छबि पर बलिहारी ॥ ७ ॥

(१२) ॥ राज भोग का पद राग सारंग ॥

अति रुचिसों जेमत पिया प्यारी ॥
श्यामा श्याम सिंहासन राजैं । सनमुख है चौकी तहां धारी ॥१॥
तापर कंचन थार सुहायो । कनक कटोरी न्यारी न्यारी ॥२॥
सखियन लाय परोसे व्यंजन । खटरसकी हैं सब तैयारी ॥३॥
पेड़ा बरफी खीर बासौंदी । सुंदर हैं मोदक पचधारी ॥४॥
खस्ता पूरी और कचौरी । भांत भांतकी है तरकारी ॥५॥
ललिता बिशाखा आदि सहेली । प्रीतभरी वो परसन हारी ॥६॥
आदर कर वहु व्यंजन परसैं । कर मनुहारैं बारी बारी ॥७॥
प्रियाके सुखमैं ग्रास देत हरि । उत प्यारे के सुखमैं प्यारी ॥८॥
जेमत मैं जो रस बरसत है । मन ललचैं लखके सुरनारी ॥९॥
तृप्त होय दोउ करत आचमन । चंद्रावलि लाईं जल झारी ॥१०
बीरी पान निवेदन करके । मथुरा है छबिपर बलिहारी ॥ ११॥

(१३) ब्यारू भोगका पद

ब्यारू आरोगत मन मोहन श्यामा संग निकुंज भवनमैं
कंचनथार धरे बहुव्यंजन स्वाद लेत दोऊ हरषत मनमैं
प्रीत रीतकी जानन हारी हाजिरठाड़ी परसन हारी ॥
कर मनुहार परोसैं सारी मनकौ मोहैं रसन्रातियनमें ॥ १ ॥

एक कहै पिय पूरी लीजै नाथ अधूरी बात न कीजै ॥
कच्चोरी पिय नाहिं पतीजै प्यारीसों भाषत सैननमैं ॥२॥
दूजी कहै लीजिये खाजा खाके मतजाओ व्रजराजा ॥
मोहन भोग लेहु महाराजा रुचिर माधुरी यामैं भारी ॥३॥
अस रसवतियां सुन हरषावैं जेमत अति आनंद मनावैं ॥
उत्तर पाय हिये सकुचावैं सखियां हरिसों गूढ वचनमैं ॥४॥
तू कचनार फरी रस देरी भावत मोकों तोरी हैरी ॥
ललिता अस हरिवचन सुनेरी लज्जा छाय गई नैनन मैं ॥५॥
अस हरषत दोउ व्यारु कीनी कर आचमन बीरी मुखलीनी ॥
आलस भरे नैन रंग भीनी लख मथुरेश चले सेजनमैं ॥६॥

---

(१४) (दूध के भोग का पद ॥ राग सोरठ)

दुग्ध कीजै पान दम्पति दुग्ध कीजै पान ॥
सुखकि पुंज निकुंज स्वामिनि स्वामी श्याम सुजान ॥
अं०—कंद मिसरी युक्त अति आनन्द प्रद मिष्टान ॥
सुधाहू तैं अधिक स्वादू अतिहि रोचक जान ॥ दम्पति ॥१॥
,, भरे कंचन द्वय कटोरा धरे थार मैं आन ॥
पियत रुचिसो प्रिया प्रीतम गुण बखान २ ॥ दम्पति ॥२॥
,, मुदित मन ललिता निवेदन किये बीरा पान ॥
नमत मथुरा चरण दम्पति वार तन मन प्राण ॥ दम्पति ॥३॥

(१५) ॥ शयन का पद राग सोरठ ॥

सेज पधारो प्यारे युगल किशोर ॥

कछु आलस कछु दृगन छयो है जोबन मदको जोर ॥सेज०॥

स्वच्छ मृदुल सुंदर सुख शैय्या खिचरहि रेशम डोर ॥

बिविध अतर अरु सुमन सुगंधी महक रहे चहुं ओर ॥सेज०॥

दर्पण पानदान जलझारी अपनी अपनी ठौर ॥

शैय्या गृहबिच रमण सामग्री हाजिर है सब तौर ॥सेज०॥

चंद्रवदन गोरी श्यामा को मोहन नैन चकोर ॥

हरि मुख कमल प्रियामन मधुकर दोउ रसिक सिरमोर ॥सेज०॥

हास बिनोद मोद उरछायो उत निद्रा को जोर ॥

सेज पधार कीजै मनभायो मथुरा कहै निहोर ॥सेज०॥



पुस्तक मिलने का पता।

यह किताब और मेरी रचित अन्य भजनों और नाटक की पुस्तकें जयपुर में निम्न लिखित स्थान पर मिलैंगी।

गुलाबचन्द बुकसेलर त्रिपोलिया बाजार देसी डाकखाना के सामने। जयपुर (राजपूताना)